RNI No. UPHIN/2000/03766 ISSN No. 2581-3528 ₹ : 20

केशव संवाद

(अप्रैल-2025)

डॉ. भीमराव रामजी आम्बेडकर और सामाजिक समरसता

केशव संवाद पत्रिका के 'हिन्दू नववर्ष विशेषांक' के विमोचन की झलकियां

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 2082 के पावन अवसर पर "केशव संवाद पत्रिका" के 'हिन्दू नववर्ष विशेषांक' का विमोचन शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के उत्तर क्षेत्र व पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग/चिंतन वर्ग में शुकतीर्थ (मुजफ्फरनगर) की पावन धरा पर हुआ। जिसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक आदरणीय कृपाशंकर जी भाईसाहब (संयुक्त क्षेत्र प्रचार प्रमुख उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड) हम सबके मार्गदर्शक शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव माननीय अतुल भाई जी कोठारी, क्षेत्रीय संयोजक उत्तर क्षेत्र व पश्चिमी उत्तर प्रदेश श्री जगराम जी, गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद के कुलपति प्रो. सचिन माहेश्वरी जी के करकमलों से हुआ।

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/03766

ISSN No. 2581-3528

अप्रैल, 2025
वर्ष : 25 अंक : 04

प्रबंध निदेशक
अणंज कुमार त्यागी

संपादक
कृपाशंकर

कार्यकारी संपादक
डॉ. नीलम कुमारी

पृष्ठ संयोजन
वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201309
फोन न. 0120 4565851
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक रमन चावला द्वारा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा.लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105 आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

नागरिक कर्त्तव्य का मिसाल है गाजियाबाद का गौसेवा ट्रस्ट 05

कुटुंब प्रबोधन में वरिष्ठ प्रचारक आदरणीय वीरेश्वर द्विवेदी जी का योगदान.....07

कांचा गाचीबोवली : जंगल नहीं, जीवन कट रहा! 09

डॉ. भीमराव रामजी आम्बेडकर और सामाजिक समरसता 10

स्मृति मंदिर और दीक्षा भूमि : दो डॉक्टर 12

संघ जैसा मैंने देखा (डॉ. अतुल कोठारी जी से एक विशेष साक्षत्कार) 14

पर्यावरण संरक्षण में जैविक कृषि की भूमिका 18

अंतरराष्ट्रीय मीडिया में हिन्दुत्व 20

टैरिफ युद्ध का भारतीय अर्थव्यवस्था पर नहीं होगा अधिक प्रभाव.....22

प्रदेश का उत्कर्ष काल प्रदेश में है अब विकास और उत्सव का काल.....24

आधुनिक भारत का तीर्थ : जलियांवाला बाग 26

संघ द्वारा पर्यावरण जागरूकता अभियान उद्देश्य, प्रभाव और चुनौतियाँ 28

वक्फ बाबा की जादुई झोली 32

ध्येय कहां निष्फल होगा 34

संविधान के निर्माता डा. आम्बेडकर (जन्मदिवस विशेष).....35

पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया, 'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail.com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

ISSN No. 2581-3528

संपादकीय

''यह भूमि सत्य और संकल्प की भूमि है, यहां का समाज दुनिया का चुना हुआ श्रेष्ठतम समाज है।''

-डॉ भीमराव आम्बेडकर

रत्नगर्भा भारत भू की पुण्य धरा पर अनेकों महापुरुषों ने जन्म लिया है जिन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से भारत को महान बनाया। भारत मां के उन सच्चे सपूतों में से एक है- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रथम संघचालक डॉ. हेडगेवार जी, जिन्होंने -

'परं वैभवं नेतुमेतत् स्वराष्ट्रं
समर्था भवत्वाशिषा ते भृशम्'

के पावन एवं पुनीत लक्ष्य को अंगीकार करते हुए लोक कल्याण की भावना से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की, और दूसरे हैं- संविधान शिल्पी, गरीबों, शोषितों एवं वंचितों के मसीहा (पालनहार) डॉ. भीमराव राम जी आम्बेडकर, जिन्होंने मैत्री भाव को कृत संकल्पित होकर लोक कल्याण के लिए सर्वस्व समर्पित कर दिया। 'वसुधैव कुटुंबकम्', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः', 'मैत्री भाव'- यही भारतीय चिंतन है, यही संघ का भी मूल चिंतन है, और इसी मूल चिंतन के साथ संघ अपने शताब्दी वर्ष की ओर बढ़ रहा है। जैसे-जैसे शताब्दी वर्ष का समय निकट आ रहा है, वैसे ही हम भारत की विस्मृत गौरवशाली विरासत, भारतीय सभ्यता व संस्कृति की पुनर्स्थापना, व विश्व कल्याण की भावना को कृत संकल्पित भारत के पुनः विश्व गुरु बनने के मार्ग पर अग्रसर हैं। साथ ही साथ देश अब जागृत होकर 'चरैवेति-चरैवेति' शुभंकर मंत्र के साथ कदम से कदम मिलाकर इस ओर बढ़ चुका है। ऐसा लगता है कि लाखों करोड़ों नवयुवक आम्बेडकर जी और गुरु जी के दिखाए हुए मार्ग पर सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तैयार हैं और यही सही वक्त है, जब भारत सम्पूर्ण विश्व का नेतृत्व करेगा। संपूर्ण विश्व आज भारत की ओर देख रहा है, भारत अब विकासशील राष्ट्र से समृद्धशाली विकसित राष्ट्र बनने की यात्रा पर चल पड़ा है।

भारत की सभ्यता एवं संस्कृति संपूर्ण विश्व को आलोकित करते हुए लोक कल्याणकारी चिंतन के साथ एक प्रकाश पुंज का काम कर रही है। ऐसे में हम सभी को इस राष्ट्र रूपी, ज्ञान रूपी यज्ञ में संमिधा बनकर हम भी चले, हम भी अपना गिलहरी योगदान दे। भारत रूपी सामाजिक समरसता के इस पुष्प को पुष्पित,पल्लवित करते हुए एक वट वृक्ष बनाने के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के इस संकल्प में हम सभी अपना योगदान दें। जो सपने बाबा साहब ने और गुरुजी ने देखे थे, उन सपनों को दृढ़संकल्पित होकर पूरा करने का प्रयास करें, यही माननीय सरसंघचालक डॉ. हेडगेवार जी व बाबा साहेब डॉ. भीमराव राम जी आम्बेडकर के लिए हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

राष्ट्र यज्ञ है भारत माँ का, संमिधा बन हम जलें।

डॉ. नीलम कुमारी

ISSN No. 2581-3528

नागरिक कर्त्तव्य का मिसाल है गाजियाबाद का गौसेवा ट्रस्ट

डॉ. अंजुला
लेखक एवं वास्तु विशेषज्ञ

देश का नागरिक होने के साथ हमारे कुछ नागरिक कर्तव्य भी हैं जिसका अनुपालन हम सभी नागरिकों को करना चाहिए। हमें स्वयं में अनुशासन रखना चाहिए क्योंकि कोई भी देश या समाज अनुशासन से ही महान बनता है। राष्ट्र, समाज और समुदाय के प्रति प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह सरकार द्वारा बनाये गये नियमों का सही ढंग से पालन करे, साथ ही अपेक्षा की जाती है वह अपने आस पास में हो रहीं सामाजिक विघटनकारी गतिविधियों का भी ध्यान रखे जो देश और समाज के लिए हितकारी नहीं है। आज हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार, बेईमानी, धोखाधड़ी जैसी घटनाएँ आम हो गई हैं। जिसे बढ़ावा देने के लिए हमारे बीच में ही रहने वाले समाज के कुछ लोग उत्तरदायी हैं। आपको अपने आँख और कान खुले रखने होंगे, अगर आपके आसपास कोई भी असामाजिक, आपराधिक घटना हो रही है जो देश, मानव समाज व अन्य प्राणियों के लिए हानिप्रद है। हमें ऐसी घटनाओं का संज्ञान लेते हुए समाज और सरकार के साथ मिलकर उसे दुरुस्त करने की दिशा में पहल करनी चाहिए। जिस दिन ऐसा करने में हम शत प्रतिशत सफल हो जायेंगे उस दिन हमें मजबूत राष्ट्र निर्माण से कोई नहीं रोक पायेगा। आजकल हमारे

पंकज शर्मा जी ने 2020 में 'गौ सेवा राष्ट्र रोटी बैंक ट्रस्ट' का पंजीकरण किया जिसका उद्देश्य गायों के लिए घरों में बची हुई रोटी इकट्ठा करना है। इनकी इस पहल का स्वागत उस समय के गाजियाबाद जिलाधिकारी ने भी किया। मुख्य विकास अधिकारी अभिनव गोपाल जी ने एक आदेश के माध्यम से हाई राइज सोसाइटीज में थ्री व्हीलर की अनुमति देकर घरों में बची हुई रोटियां को इकट्ठा करने में भरपूर मदद की।

आसपास घटित हो रहीं बहुत सारी घटनायें जैसे बालश्रम, अस्वच्छता, सड़क सुरक्षा नियम के साथ खिलवाड़, महिला उत्पीड़न, बालअपराध, पशुओं के प्रति क्रूरता भ्रष्टाचार आदि घटनाएँ आम हो गई हैं जिसे हम देखकर भी अनदेखा कर देते हैं। ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए हमें पूर्णनिष्ठा से समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए इन सभी समस्याओं को समाज व प्रशासन के साथ मिलकर सकारात्मक हल ढूंढने और रोकने का प्रयास करना चाहिये। हमे अपनी नयी पीढ़ी को अनुशासित, कर्तव्यनिष्ठ, समयनिष्ठ, ईमानदार और एक जिम्मेदार नागरिक होने के गुण सिखाने होंगे।

अभी हाल ही में सोशल मीडिया में एक घटना देखने को मिली जिसमें एक महिला बिना टिकट रेलगाड़ी के एसी श्रेणी में सफर कर रही थी। उससे जब रेलवे विभाग के टिकट निरीक्षक व आरपीएफ विभाग के अधिकारियों ने टिकट दिखाने का अनुरोध किया तो वह महिला टिकट दिखाने से मना करते हुए अधिकारियों और रेल के कोच में उपस्थित यात्रियों से अभद्र टिप्पणियाँ करने लगी। हैरानी की बात तो यह है कि उस महिला के गलत बयानबाजी और अभद्रता करने पर लोग शांत रहे। किसी ने उसके इस गलत बर्ताव पर उसे एहसास कराने की भी नहीं सोची। आप की यह चुप्पी हमारे देश और समाज के विकास के लिए कलंक है। ऐसी स्थिति में हमें आगे बढ़कर एक अच्छे नागरिक होने का कर्तव्य निभाना चाहिए और ऐसे लोगों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्यवाही की मांग करनी चाहिए ताकि ऐसी नकारात्मक घटनाओं की पुनरावृत्ति भविष्य में फिर से ना हो।

इस लेख के माध्यम से अब मैं एक ऐसी सच्ची घटना का जिक्र करने जा रही हूँ जो आपको संजीदगी, सकारात्मकता से भाव विभोर कर

ISSN No. 2581-3528

एक अच्छे नागरिक होने के कर्तव्यों की और प्रेरित कर देगी। यह जीवन्त कहानी है श्रीमान पंकज शर्मा की जो गाजियाबाद के सेक्टर–23 संजय नगर में राधा–कृष्ण नाम से गौशाला चलाते हैं। इनके द्वारा चलायी गई कई गाड़ियाँ आपको गाजियाबाद की लगभग कई हाईराइज सोसाइटीज में बेसहारा गायों के लिए रोटियां इकट्ठा करती दिख जायेंगी। उनसे बात करने पर पता चला कि उन्हें बेजुबान जानवरों से बहुत लगाव है। इनके संस्थान के लोग सड़क पर भटकती बेसहारा गायों को अपने गोशाला में ले जाकर उनकी सेवा करते हैं। पंकज शर्मा जी मूलतः उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के काठा गाँव के रहने वाले हैं। उन्होंने अपनी गौशाला में अब तक पाँच सौ से अधिक गायों को आश्रय दे रखा हैं और ये सभी गायें बिना दूध देने वाली हैं। वह गाय को गौमाता कह कर संबोधित करते हैं। सड़कों पर कोई भी गाय उन्हें किसी भी अवस्था में मिलती है वह उसको अपनी गोशाला में लाकर स्वस्थ करने का प्रयास करते हैं। जब हमने उनसे पूछा कि उन्हें ऐसी प्रेरणा कहां से मिली तो उन्होंने बताया की उनके बाबा बैद्य थे जिनका नाम श्रीमान शम्भूदयाल था, जो गौरक्षक के साथ गौपालक भी थे। वह बहुत सारी बीमारियों के इलाज की दवाइयां गौमूत्र से निर्मित करते थे। आज उन्हीं की सीख लेकर पंकज शर्मा जी गौमाता की सेवा का कार्य कर रहे हैं। इसके अलावा मानव सेवा व अन्य सामाजिक कार्यों में भी उनकी रुचि है। 2022 से 2025 के बीच अब तक वह 32 कन्याओं का सामूहिक विवाह करा चुके हैं। जब मैंने उनसे पूछा कि आप इतना सब कैसे कर लेते हैं, तो विनम्रता से उनका कहना था यह सब गौमाता की कृपा है । मैं तो नागरिक होने का कर्त्तव्य कर रहा हूँ। मैं तो सिर्फ प्रारम्भ करता हूँ लोग स्वयं ही जुड़ते चले जाते हैं। पंकज शर्मा जी भोलेनाथ के भक्त भी हैं। वह हर साल गाजियाबाद के गुलधर रोड पर कांवड़ सेवा शिविर और भंडारे का आयोजन करते हैं। जिसमे उन्हें सैकड़ों भक्तों

2022 से 2025 के बीच अब तक वह 32 कन्याओं का सामूहिक विवाह करा चुके हैं । जब मैंने उनसे पूँछा कि आप इतना सब कैसे कर लेते हैं, तो विनम्रता से उनका कहना था यह सब गौमाता की कृपा है । मैं तो नागरिक होने का कर्त्तव्य कर रहा हूँ। मैं तो सिर्फ प्रारम्भ करता हूँ लोग स्वयं ही जुड़ते चले जाते हैं ।

और गरीबों की सेवा का अवसर मिलता है। अभी उनके ट्रस्ट में 70 से अधिक महिलायें काम कर रही हैं जो गाय के गोबर का प्रयोग कर वैज्ञानिक विधि से प्रदूषण रहित ईकोफ्रेंडली दिये, हवन सामग्री, धूपबत्ती, उपले, दन्तमंजन, गोवर्धन की मूर्तियां, खेतों और पौधों के लिए खाद, दर्द निवारक तेल आदि तैयार करती हैं। यह बाजार में बहुत कम दाम में उपलब्ध है। जिसका लाभ बहुत लोगों को मिल रहा है । उनकी इस पहल की सराहना बहुत सारे सामाजिक संस्थान कर चुके हैं। उनकी इस पहल से कई घरों को व्यवसाय भी मिला है और उनके परिवार का भरणपोषण भी हो रहा है । पंकज शर्मा जी ने 2020 में 'गौ सेवा राष्ट्र रोटी बैंक ट्रस्ट' का पंजीकरण किया जिसका उद्देश्य गायों के लिए घरों में बची हुई रोटी इकट्ठा करना है। इनकी इस पहल का स्वागत उस समय के गाजियाबाद जिलाधिकारी ने भी किया। मुख्य विकास अधिकारी अभिनव गोपाल जी ने एक आदेश के माध्यम से हाई राइज सोसाइटीज में थ्री व्हीलर की अनुमति देकर घरों में बची हुई रोटियां को इकट्ठा करने में भरपूर मदद की। आज इस ट्रस्ट के पास 12 से भी अधिक चालक सहित थ्री व्हीलर बैटरी रिक्शे हैं जो अलग अलग अपार्टमेण्टस में जाकर लोगों के घरों से बची हुई रोटी को इकट्ठा करने का काम कर रहे हैं। जिससे गायों को भरपेट भोजन मिल रहा है।

सामाजिक कार्य करते हुए इस संस्थान ने अगले कुछ वर्षों में 101 हिन्दू लड़कियों की शादियां और 10000 गायों की सेवा का लक्ष्य निर्धारित किया है। हमें ऐसे लोगों से राष्ट्र का जिम्मेदार नागरिक होने के कर्तव्यों की सीख लेनी चाहिये। ■

ISSN No. 2581-3528

कुटुंब प्रबोधन में वरिष्ठ प्रचारक आदरणीय वीरेश्वर द्विवेदी जी का योगदान

डॉ. शिवा शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर - अंग्रेजी विभाग
झम्मन लाल पी.जी. कॉलेज, हसनपुर, अमरोहा

वसुधैव कुटुम्बकम् सनातन धर्म का मूल संस्कार तथा विचारधारा है जो महा उपनिषद सहित कई ग्रन्थों में लिपिबद्ध है। इसका अर्थ है– धरती ही परिवार है (वसुधा एव कुटुम्बकम्)। यह वाक्य भारतीय संसद के प्रवेश कक्ष में भी अंकित है।

अयं निजः परोवेती गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।

– (महोपनिषद्, अध्याय 6, मंत्र 71)

अर्थ – यह (मेरा) बन्धु है और यह नहीं है, इस तरह की गणना छोटे चित्त (सङ्कुचित मन) वाले लोग करते हैं। उदार हृदय वाले लोगों के लिए तो (सम्पूर्ण) धरती ही परिवार है।

कुटुंब प्रबोधन एक महत्वपूर्ण विषय है, जो परिवारों की समस्याओं को समझने, उन्हें समाधान करने और समृद्ध और समरस्थ परिवार संस्थान बनाने में मदद करता है। यह विशेष रूप से परिवारों के बीच संबंध, संघर्ष, संवाद, और संघर्षों को समझने और समाधान करने में मदद करता है।व्यक्ति को सबसे पहले संस्कार अपने परिवार से ही मिलते हैं। समाज को सुसंस्कृत, चरित्रवान, राष्ट्र के प्रति समर्पित और अनुशासित बनाने में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका है इसलिये कुटुंब ही आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक इकाई है। परिवारों में एकता और राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत होने पर ही राष्ट्र शक्तिशाली बनेगा। कुटुंब प्रबोधन के जरिए समाज के विभिन्न परिवारों के बीच बेहतर तालमेल, परस्पर सहयोग और सौहार्द कायम किया जा सकता है, जिससे हम अपने समाज और देश को शक्तिशाली बना सकते हैं ।

अगले साल विजय दशमी को संघ के 100 साल पूरे हो जाएंगे और इसके बाद संघ इन पांच बिंदुओं पर ज्यादा फोकस करेगा जो संघ प्रमुख ने बताए हैं। संघ तीन स्तर पर कुटुंब प्रबोधन का काम कर रहा है। पहला स्तर है परिवार। इसमें स्वयंसेवक अपने परिवार में इसे लागू कर रहे हैं। हफ्ते में कम से कम एक दिन परिवार के साथ बैठकर अपनी संस्कृति, परंपरा और इतिहास पर बात करते हैं। दूसरा स्तर है स्वयंसेवकों के परिवारों की बैठक। इसमें तीन–चार महीने में स्वयंसेवकों के परिवार एकत्र होते हैं और चर्चा करते हैं। तीसरा स्तर है स्वयंसेवकों के आसपास रहने वाले परिवार। स्वयंसेवक अपने आसपास के परिवारों के बीच इसे लेकर बातचीत करते हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ समाज में सकारात्मक परिवर्तन के लिए पिछले लगभग 99 वर्षों से निरंतर कार्य कर रहा है। भारतीय समाज में सकारात्मक परिवर्तन को गति देने एवं समाज में अनुशासन व देशभक्ति के भाव को बढ़ाने के उद्देश्य से माननीय सर संघचालक मोहन भागवत ने समाज में पंच परिवर्तन का आह्वान किया है ताकि अनुशासन एवं देशभक्ति से ओतप्रोत युवा वर्ग अनुशासित होकर अपने देश को आगे बढ़ाने की दिशा में कार्य करे। इस पंच परिवर्तन में पांच आयाम शामिल किए गए हैं– (1) स्व का बोध अर्थात स्वदेशी, (2) नागरिक कर्तव्य, (3) पर्यावरण, (4) सामाजिक समरसता एवं (5) कुटुम्ब प्रबोधन। इस पंच परिवर्तन कार्यक्रम को सुचारू रूप से लागू कर समाज में बड़ा परिवर्तन लाया जा सकता है।

अपनी शताब्दी वर्ष की ओर बढ़ते हुए राष्ट्रीय सेवा संघ पंच परिवर्तन पर जोर दे रहा है और कुटुंब प्रबोधन के लिए सबसे ज्यादा काम वरिष्ठ प्रचारक आदरणीय श्री वीरेश्वर द्विवेदी जी ने किया है। वीरेश्वर द्विवेदी की शिक्षा उरई डीएवी कॉलेज से परास्नातक तक हुई। वीरेश्वर द्विवेदी डीएवी कॉलेज उरई के छात्रसंघ अध्यक्ष भी रहे, वह विहिप नेता स्व. अशोक सिंहल की प्रेरणा से सन् 1972 में पत्रकारिता की नौकरी छोड़कर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बने। वह प्रयाग महानगर के प्रचारक, विद्यार्थी परिषद के संगठन मंत्री, राष्ट्रधर्म पत्रिका के सम्पादक, हिन्दू विश्व पत्रिका के सम्पादक, पथ–संकेत के सम्पादक, विश्व हिन्दू परिषद के प्रवक्ता, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के बौद्धिक प्रमुख एवं क्षेत्र प्रचारक प्रमुख आदि दायित्वों का निर्वहन कियावर्तमान में वह कुटुम्ब प्रबोधन

ISSN No. 2581-3528

गतिविधि उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड के संयुक्त क्षेत्र प्रमुख का दायित्व निर्वहन कर रहे थे।

प्रयागराज की धरती से प्रचारक जीवन प्रारम्भ करने वाले वीरेश्वर द्विवेदी का लक्ष्मणनगरी में 4 सितम्बर को निधन हुआ। उनका जन्म 17 अगस्त 1945 को कानपुर देहात के गाँव–भाल (राजापुर) गांव में हुआ था। कानपुर संघ कार्यालय पर रहकर पढ़ाई की। उरई डीएवी कॉलेज से परास्नातक की शिक्षा ग्रहण की। डीएवी कॉलेज उरई के छात्रसंघ अध्यक्ष भी रहे। बाद में दैनिक जागरण से पत्रकारिता की शुरूआत की। अशोक सिंघल से वह बहुत प्रभावित थे। अशोक सिंघल की प्रेरणा से ही सन 1972 में दैनिक जागरण से पत्रकारिता की नौकरी छोड़कर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बने थे। सबसे पहले प्रयाग महानगर के प्रचारक के नाते उनकी घोषणा हुई। इसके बाद अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में उन्हें भेजा गया। इस समय जो पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र है उस समय प्रान्त था तो प्रान्त संगठन मंत्री के नाते उनकी योजना हुई। इसके बाद पश्चिमी उत्तर प्रदेश में क्षेत्र बौद्धिक प्रमुख रहे। संघ शिक्षा वर्गों में प्रायः बौद्धिक विभाग ही उनके जिम्में रहता था।

संघ में जब प्रचार विभाग शुरू हुआ तो उन्हें क्षेत्र प्रचार प्रमुख बनाया गया और स्व.अधीश जी को सह क्षेत्र प्रचार प्रमुख बनाया गया था।

राष्ट्रभाव के जागरण के लिए भाऊराव देवरस ने राष्ट्रधर्म के रूप में जो बीजारोपण किया था उस राष्ट्रधर्म पत्रिका के वर्ष 1984 से लेकर 1995 तक सम्पादक रहे। राष्ट्रधर्म के माध्यम से अनेक नयी प्रतिभाओं को उभरने का अवसर उनके समय में मिला।

श्री राम मंदिर आंदोलन में भी वीरेश्वर द्विवेदी की अहम भूमिका रही। देशभर के पत्रकारों से उनकी घनिष्ठता थी। वीरेश्वर द्विवेदी अवध प्रान्त का मुख पत्र पथ संकेत और विश्व हिन्दू परिषद की पत्रिका हिन्दू विश्व का भी संपादन किया। उन्होंने 30 पुस्तकें लिखी हैं। लखनऊ के लोकहित प्रकाशन से भी उनकी पांच पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय मंत्री और प्रवक्ता भी रहे। राजनीति की भी उन्हें अच्छी समझ थी। अटल जी जब भी लखनऊ से चुनाव लड़ते थे तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से वीरेश्वर द्विवेदी को ही लगाया जाता था। बहुत कम ही लोग हैं जिन्हें अशोक सिंघल और अटल जी दोनों को विश्वास प्राप्त था। उनमें वीरेश्वर जी भी थे।

संस्कृति व संस्कारों के प्रति वह हमेशा मार्गदर्शन करते थे। लखनऊ विश्व संवाद केन्द्र पर जब उनका केन्द्र घोषित हुआ तो महानगर में परिवार प्रबोधन

इसी साल विजय दशमी को संघ के 100 साल पूरे हो जाएंगे और इसके बाद संघ इन पांच बिंदुओं पर ज्यादा फोकस करेगा जो संघ प्रमुख ने बताए हैं। संघ तीन स्तर पर कुटुंब प्रबोधन का काम कर रहा है। पहला स्तर है परिवार। इसमें स्वयंसेवक अपने परिवार में इसे लागू कर रहे हैं।

गतिविधि को गति देने लगे। उनके आग्रह पर मैंने इंदिरानगर में संपन्न परिवार प्रबोधन की गोष्ठी को मैंने कवर किया। दुर्योग से यही उनका अंतिम सार्वजनिक कार्यक्रम रहा।

जो उदार हृदय वाले होते हैं। सारी पृथ्वी ही, उनका परिवार होता है। कुटुंब प्रबोधन कि अगर हम चर्चा करें तो सबसे पहले घर की माता का नाम आता है, उन्होंने बताया कि श्री अशोक सिंघल जी के गुरु जी ने इस पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यदि घर की माताएं आटा गूंथते समय गायत्री मंत्र का जाप करें, असर आटे के माध्यम से स्वयं ही प्रेषित हो जाएगा। दीनदयाल उपाध्याय ने एक शब्द का प्रयोग करते हुए कहा पुण्यवती रोटी, उन्होंने बताया पुण्यवती रोटी को कमाने में जो साधन लगे हैं, उसका एक–एक अंश पुण्य से भरा हुआ होना चाहिए। एक बार गुरु नानक देव जी के यहां कोई सेठ अपने पकवान बनाकर लेकर गया तो उसने कहा कि हे महाराज! मैं आपके लिए खाना बना कर लेकर आया हूं। आप इसे स्वीकार कीजिए जब उन्होंने मालपुआ को निचोड़ा तो उस मालपुआ में से लाल–लाल बूंदे टपकने लगी और यह बूंदे शोषण की बूंदे थी। हमारी रोटी का अंश ऐसा होना चाहिए। जिसमें हमारी रोटी इस तरह से कमाई हुई होनी चाहिए जिसमें दूध की धाराएं बहें।

एक बार उन्होंने बताया कि विवेक विवेकानंद जी का भाषण शिकागो के पादरी संघ में सुनकर यह प्रस्ताव पारित किया कि जो लोग भारत के लोगों को यह मानते हैं कि इन्हें संस्कारी और शिक्षित होना चाहिए। वह सन्यासी का भाषण सुने और भारत के धार्मिक ग्रंथ और भारत की संस्कृति के आगे कोई भी ज्ञान टिकने वाला नहीं है। मातृशक्ति को ही उन्होंने सबसे बड़ी शक्ति बताया और भारतीय संस्कृति से ही इसका कल्याण होगा।

वह हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी के जानकार थे। पढ़ने लिखने का उनका शौक था। अंतिम समय तक उन्होंने लिखना पढ़ना नहीं छोड़ा। अगस्त 2023 के अंक में वीरेश्वर द्विवेदी द्वारा लिखित संघ शताब्दी वर्ष पर एक भावपूर्ण कविता प्रकाशित हुई है।78 वर्षीय कुटुंब प्रबोधन में वरिष्ठ प्रचारक आदरणीय वीरेश्वर द्विवेदी जी का निधन लंबी बीमारी के चलते हुए 4 सितंबर 2023 को हो गया। वीरेश्वर द्विवेदी ने अपना सम्पूर्ण जीवन हिन्दू समाज के उत्कर्ष में लगाया। संघ, समाज कार्य व पत्रकारिता में उनका योगदान चिरस्थायी रहेगा। ■

ISSN No. 2581-3528

कांचा गाचीबोवली : जंगल नहीं, जीवन कट रहा!

सोनम लववंशी
स्वतंत्र लेखिका एवं शोधार्थी

जब जंगल कटते हैं, तो सिर्फ पेड़ नहीं गिरते, बल्कि सभ्यता की जड़ें भी हिलती हैं। कांचा गाचीबोवली का 400 एकड़ का जंगल भी अब इसी लालच, अदूरदर्शिता और पूंजीवादी षड्यंत्र का शिकार हो रहा है। इस विनाश की आहट को समझने के लिए बस एक प्रश्न उठता है कि क्या हमारे बच्चों का भविष्य महज कुछ अरबों-खरबों की परियोजनाओं के लिए बलिदान कर दिया जाएगा? हैदराबाद का कांचा गाचीबोवली क्षेत्र केवल एक जंगल नहीं है, यह एक संपूर्ण इको-सिस्टम है, जो न केवल शहर को ऑक्सीजन देता है, बल्कि 700 से अधिक पौधों की प्रजातियों, 237 पक्षी प्रजातियों और चित्तीदार हिरण, जंगली सूअर, भारतीय सितारा कछुए, मॉनिटर छिपकली और भारतीय रॉक पाइथन जैसे जीवों का आश्रयस्थल है। इन जीवों में से आठ प्रजातियाँ वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 के अंतर्गत संरक्षित हैं। इस जंगल का विनाश केवल प्रकृति का नुकसान ही नहीं है, यह एक विध्वंसकारी कदम है, जो हैदराबाद के पर्यावरण को स्थायी रूप से क्षति पहुँचाएगा। आंकड़ों की बात करें तो भारत में 13,000 वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्र पर अतिक्रमण हो चुका है।

इतिहास गवाह है कि जंगलों का विनाश सभ्यताओं के अंत का अग्रदूत होता है। चाहे वह मेसोपोटामिया हो, माया सभ्यता हो, या फिर सिंधु घाटी। जंगलों की समाप्ति के बाद वहां जीवन अस्थिर हो गया। फिर भी हम वही भूल दोहरा रहे हैं। जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणाम हम रोज देख रहे हैं। आसमान में धुएँ का घना आवरण, बढ़ता तापमान, अनियमित वर्षा, बेमौसम प्राकृतिक आपदाएं। फिर भी, तथाकथित विकास की अंधी दौड़ में हम अपने फेफड़ों को धीरे-धीरे गैस-चैंबर में बदलने को तैयार हैं। क्या यह विकास है? सरकारें आती हैं, सरकारें जाती हैं,

लेकिन जंगल कटने की प्रक्रिया जारी रहती है। जिन नेताओं को इस वन विनाश को रोकने के लिए आवाज उठानी चाहिए, वे या तो चुप हैं या फिर बिल्डरों, कॉर्पोरेट लॉबियों और ठेकेदारों की दलाली कर रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने 7 अप्रैल 2025 तक कांचा गाचीबोवली जंगल के विनाश पर अस्थायी रोक तो लगा दी है, लेकिन क्या यह स्थायी राहत होगी? इतिहास बताता है कि जब तक जनता संगठित होकर आवाज़ नहीं उठाती, तब तक ऐसे निर्णय कागजी साबित होते हैं।

दिल्ली, जहां वायु गुणवत्ता सूचकांक हर साल खतरनाक स्तर पर पहुंच जाता है। क्या हैदराबाद भी उसी राह पर चलना चाहता है? यह केवल एक जंगल की लड़ाई नहीं है, यह पूरी मानवता की लड़ाई है। यह सवाल पर्यावरणविदों का नहीं, बल्कि हर नागरिक का होना चाहिए। आखिर किस हक से हम आने वाली पीढ़ियों की साँसों पर व्यापार कर रहे हैं? यह सिर्फ पौधों और पशुओं का मामला नहीं है, यह हमारे अपने अस्तित्व का सवाल है। सोशल मीडिया पर राष्ट्रीय पक्षी मोर के करुण क्रंदन की वायरल वीडियो ने सबका ध्यान खींचा है, लेकिन क्या यह काफी है? जब तक हम सब मिलकर इस विनाश के खिलाफ आवाज नहीं उठाएंगे, तब तक ये क्रंदन सोशल मीडिया तक सीमित रह जाएंगे और जमीन पर जंगलों की लाशें बिछती रहेंगी।

दरअसल जिस 400 एकड़ जंगल पर आधुनिक विकास की गाथा लिखने की तैयारी है। वह हैदराबाद यूनिवर्सिटी के बहुत नजदीक है। ऐसे में क्या यह स्वीकार्य है कि ज्ञान के मंदिर में विनाश की प्रयोगशाला बनाई जाए? क्या विकास की परिभाषा कंक्रीट के जंगल खड़े करना भर रह गई है? हम यह क्यों भूल जाते हैं कि जब आखिरी पेड़ कट जाएगा, आखिरी नदी सूख जाएगी और आखिरी मछली मर जाएगी, तब हमें एहसास होगा कि पैसा पाकर जिंदा नहीं रहा जा सकता। समय आ गया है कि हम इस जंगलविनाश के खिलाफ एकजुट हों। हमें उन राजनेताओं से सवाल करने होंगे, जो केवल उद्योगपतियों के हित साधने में लगे हैं। हमें सरकार को यह स्पष्ट संदेश देना होगा कि जंगल केवल कागजों पर नहीं, बल्कि धरती पर सुरक्षित रहने चाहिए। यदि आज हम नहीं जागे, तो कल हमारे बच्चे हमसे पूछेंगे – जब जंगल कट रहे थे, तब आप कहाँ थे? और हमारे पास इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं होगा। ■

ISSN No. 2581-3528

डॉ. भीमराव रामजी आम्बेडकर और सामाजिक समरसता

प्रोफेसर (डॉ.) हरेन्द्र सिंह
सरकार द्वारा 'शिक्षक श्री'
पुरस्कार से विभूषित ख्यातिप्राप्त शिक्षाविद्,
शैक्षिक प्रशासक, प्रोफेसर एवं राष्ट्रवादी चिंतक

भारतीय सम्विधान के शिल्पकार
परम् श्रद्धेय डॉ.भीमराव रामजी आम्बेडकर

श्रीमद्भागवत गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है, "पण्डिताः समदर्शिनः" अर्थात् विद्वान सबको समान दृष्टि से देखते हैं। बाबा साहब डॉ. भीमराव रामजी आम्बेडकर उच्च कोटि के विद्वान थे, उन्होंने श्रीमद्भागवत गीता के आदर्शों पर चलते हुए कहा कि, "बंधुता, यही स्वतंत्रता तथा समता का आश्वासन है।"

श्रद्धेय बाबा साहब डॉ. भीमराव रामजी आम्बेडकर किसी जाति विशेष के नेता नहीं थे । इस भारत में जो भी गरीब था, शोषित था, वंचित था, उपेक्षित था ऐसे समग्र समाज का उत्थान करना ही बाबा साहब का लक्ष्य था। बाबा साहब ने बचपन से निर्वाण तक अपने जीवन में केवल इस बात का प्रयास किया कि समता का दृष्टिकोण अपनाते हुए एक श्रेष्ठ भारत बने, सामाजिक विषमता समाप्त हो, आपस में मेलजोल बढ़े, स्नेह पुष्पित–पल्लवित हो। वरिष्ठ चिंतक विचारक रमेश पतंगे के अनुसार डॉ. आम्बेडकर का लक्ष्य था हिंदू समाज में व्याप्त अस्पृश्यता, छुआ–छूत, जाति–पाति आदि बुराइयों को खत्म करना। इन बुराइयों को खत्म किए बिना देश बड़ा नहीं हो सकता और समाज शक्तिशाली भी नहीं हो सकता। उन्होंने धार्मिक सुधार एवं सामाजिक सुधार के जरिए सामाजिक समता प्राप्त करने के लिए आजीवन संघर्ष किया। नागरिकों की स्वतंत्रता एवं समता पर उन्होंने अधिक बल दिया।

श्रद्धेय बाबा साहब डॉ. भीमराव रामजी आम्बेडकर ने संपूर्ण समाज की एकजुटता और सामाजिक समरसता की बात कही। सामाजिक समरसता का अर्थ है– सभी को अपने समान समझना। जातिगत भेदभाव एवं अस्पृश्यता को दूर कर लोगों में परस्पर प्रेम एवं सौहार्द बढ़ाना तथा समाज के सभी वर्गों एवं वर्णों के मध्य एकता स्थापित करना ही सामाजिक समरसता है। सामाजिक एकता एवं समरसता से समाज के लोगों में एकजुटता आती हैं और सभी जाति धर्म के लोग मिलजुल कर एक साथ प्रेम पूर्वक रहते हैं। इससे वहां के लोगों में समाज के प्रति सेवा, सहयोग एवं समर्पण का भाव विकसित होता है तो वह देश बहुत तेजी से विकास करता है।

श्रीमद्भागवत गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है, "पण्डिताः समदर्शिनः" अर्थात् विद्वान सबको समान दृष्टि से देखते हैं। बाबा साहब डॉ. भीमराव रामजी आम्बेडकर उच्च कोटि के विद्वान थे, उन्होंने श्रीमद्भागवत गीता के आदर्शों पर चलते हुए कहा कि, "बंधुता, यही स्वतंत्रता तथा समता का आश्वासन है। स्वतंत्रता तथा समता की रक्षा कानून से नहीं होती। समरसता पूर्वक व्यवहार से स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व इन तीनों तत्वों द्वारा साध्य तक पहुंचा जा सकता है। यद्यपि इन तत्वों के आधार पर हिंदू समाज की रचना नहीं हुई। समरसता स्थापित करने हेतु सामाजिक न्याय का तत्व भी उतना ही जरूरी है।"

15 अगस्त, 1947 को जब हमारे देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई तब डॉ. भीमराव रामजी आम्बेडकर को उनकी विद्वता के आधार पर देश का प्रथम कानून मंत्री बनाया गया। देश की संसद ने 29 अगस्त 1947 को संविधान बनाने के लिये जो प्रारूप समिति बनाई उसका अध्यक्ष भी उन्हीं को बनाया गया। उन्होंने संविधान के माध्यम से दलितों, पिछड़ों, महिलाओं सहित समस्त नागरिकों को मूल अधिकार प्रदान किया। राज्य को

ISSN No. 2581-3528

कल्याणकारी राज्य बनाने का प्रयास किया। दलितों व जनजातियों को लोकसभा, विधानसभा व सरकारी नौकरियों में आरक्षण प्रदान किया।

प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने एक ऐसे संविधान की रचना की जिससे कि समतामूलक न्यायपूर्ण समाज की स्थापना हो सके। संविधान की प्रस्तावना में यह कहा गया कि, "हम भारत के लोंग भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न समाजवादी, पंथ निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिये तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त करने के लिये, तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26.11.1949 को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।" (इसमें समाजवादी, पंथ निरपेक्ष एवं अखंडता शब्द 42वें संविधान संशोधन द्वारा 1976 में जोड़ा गया।)

अनुच्छेद 16 के अनुसार राज्य के अधीन किसी पद पर नियुक्ति के सम्बन्ध में सभी नागरिकों के लिये अवसर की समानता होगी। कोई नागरिक केवल धर्म, मूलवेश, जाति, लिंग, उद्भव, जन्मस्थान या इनमें से किसी के आधार पर राज्य के अधीन किसी नियोजन या पद के सम्बन्ध में अपात्र नहीं होगा या उससे विभेद नहीं किया जायेगा। अनुच्छेद 17 छुआछूत के व्यवहार को कानूनन दंडनीय अपराध घोषित करता है, इसके अनुसार अस्पृश्यता का अंत किया जाता है और उसका किसी भी रूप में आचरण निषिद्ध किया जाता है। इसमें प्रावधान है कि अस्पृश्यता से उपजी किसी निर्योग्यता को लागू करना अपराध होगा जो विधि के अनुसार दंडनीय होगा।

श्रद्धेय बाबा साहब डॉ. भीमराव रामजी आम्बेडकर ने अनुच्छेद 19 के माध्यम से सभी नागरिकों को वाक–स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति स्वतंत्रता, शान्तिपूर्वक और निरायुध सम्मेलन, संघ बनाने भारत के राज्य क्षेत्र में सर्वत्र अवाध संचरण एवं भारत के राज्य क्षेत्र के किसी भाग में निवास करने और बस जाने की तथा कोई भी वृत्ति, उपजीविका, व्यापार करने का भी अधिकार प्रदान किया, अनुच्छेद 23 के द्वारा मानव का दुर्व्यापार और बेगार तथा इसी प्रकार का अन्य बलात् श्रम प्रतिषिद्ध किया तथा अनुच्छेद 32 के द्वारा मूल अधिकारों को प्रवर्तित कराने के लिये समुचित कार्यवाहियों द्वारा उच्चतम न्यायालय में समावेदन करने का अधिकार प्रत्याभूत किया।

इस अनुच्छेद 32 पर टिप्पणी करते हुये डॉ. आम्बेडकर ने संविधान सभा में कहा था, "यदि मुझे यह कहा जाय कि मैं संविधान के किस अनुच्छेद को सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानता हूँ ऐसा अनुच्छेद जिसके बिना संविधान व्यर्थ हो जायेगा तो मैं किसी अनुच्छेद को नहीं इसी को इंगित करूंगा। यह संविधान की आत्मा है, उसका हृदय है।"

अनुच्छेद 38 के द्वारा बाबा साहब ने राज्य को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय सुनिश्चित कर आय स्थिति, सुविधाओं तथा अवसरों में असमानताओं को कम करके सामाजिक व्यवस्था को सुरक्षित एवं संरक्षित कर लोगों के कल्याण को बढ़ावा देने का प्रयास करने हेतु उपबंधित किया व अनुच्छेद 39 के द्वारा पुरूष और स्त्री सभी नागरिकों को समान रूप से जीविका के पर्याप्त साधन प्राप्त करने का अधिकार, पुरूष और स्त्रियों दोनों के लिये समान कार्य के लिये समान वेतन सुनिश्चितीकरण की व्यवस्था तथा अनुच्छेद 39 क के द्वारा राज्य को निर्देशित किया की वह सभी को सामान रूप से निःशुल्क विधिक सहायता की व्यवस्था करेगा और इस प्रकार काम करेगा कि सबके लिये समान न्याय सुनिश्चित हो। अनुच्छेद 45 के अनुसार बालकों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का उपबन्ध करने के साथ ही अनुच्छेद 46 में राज्य को दुर्बलतर लोगों जिनमें अनुसूचित जातियाँ तथा जनजातियाँ आती हैं, उनकी शिक्षा सम्बन्धी तथा आर्थिक हितों की रक्षा करने और सभी प्रकार के सामाजिक अन्याय एवं शोषण से उनको बचाने के उपबंध करने हेतु निर्देशित किया।

बाबा साहब डॉ. भीमराव रामजी आम्बेडकर ने 1948 में महिलाओं की स्थिति में सुधार हेतु संसद में हिन्दू कोड बिल भी प्रस्तुत किया था, जोकि हिन्दू महिलाओं के विवाह विच्छेद, पिता की सम्पत्ति में उत्तराधिकार, संतान गोद लेना, विधवा होने पर पुनर्विवाह से सम्बन्धित था।

डॉ. आम्बेडकर जी ने नारी उत्थान सम्बन्धी प्रयासों में समता के सिद्धान्त को महत्त्व दिया। उनका मत ऐसे समाज की स्थापना करना था जिसमें आदर्श, न्यायपूर्ण, स्वतंत्रता, समानता, बन्धुत्व की भावना हो तथा स्त्री जाति का भी उत्थान हो सके। स्त्रियों की दुरावस्था का उन्होंने घोर विरोध किया। उनका मानना था कि स्त्रियों के सम्मानपूर्वक तथा स्वतंत्र जीवन के लिए शिक्षा बहुत आवश्यक है। डॉ. आम्बेडकर ने हमेशा स्त्री–पुरुष समानता का समर्थन किया।

श्रद्धेय बाबा साहब डॉ. भीमराव रामजी आम्बेडकर ने न केवल भारत के संविधान को अपने विचारों में पिरोया बल्कि समरसता के उस भाव को भी आगे बढ़ाया है जो भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। बाबा साहब ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने देश की अखंडता एवं एकता के लिए सतत प्रयास किया उन्होंने ऐसे संविधान को प्रस्तुत किया जिसमें सभी वर्गों को समानता व समरसता का भाव मिले। ■

ISSN No. 2581-3528

स्मृति मंदिर और दीक्षा भूमि : दो डॉक्टर, लेकिन भारत और हिंदू समाज के लिए एक जैसी चिंताएं

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल
ब्लॉगर एवं शिक्षाविद्

आरएसएस ने सत्य का प्रचार करके और इसे जमीनी स्तर पर लागू करके हमारे समाज में अस्पृश्यता और जातिगत भेदभाव को दूर करने के लिए बड़े प्रयास किए हैं। 100 वर्षों से, आरएसएस और संबद्ध संस्थानों और संगठनों ने समाज के प्रत्येक वर्ग को प्यार और करुणा के साथ ऊपर उठाने का काम किया है।

हिंदू नववर्ष के दौरान हिंदू समुदाय को एकजुट करने के लिए समानता और समभाव का संदेश देखने को मिला। दोनों अद्भुत आदर्शों डॉ. आम्बेडकर और डॉ. हेडगेवार में हिंदुओं को एकजुट करने और राष्ट्र के गौरव को पुनर्स्थापित करने के लिए अस्पृश्यता और जातिगत भेदभाव को समाप्त करने की दृष्टि थी। यद्यपि उनके रास्ते अलग-अलग थे, लेकिन राष्ट्र-प्रथम के दृष्टिकोण और हिंदू और अन्य संस्कृतियों के गहन परीक्षण ने उन्हें यह एहसास दिलाया कि केवल हिंदू एकता ही महान भारत का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। पिछले एक दशक में, पीएम मोदी ने सामाजिक और आर्थिक विषमताओं को कम करने और हाशिए के समूहों की स्थिति को ऊपर उठाने की कोशिश की है परिणामस्वरूप, जब डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर ने आरएसएस शाखा का दौरा किया, तो उन्होंने देखा कि कोई भी जाति के बारे में बात नहीं करता है और सभी एक स्वाभाविक मित्र या भाई हैं और उनके साथ समान व्यवहार किया जाता है। अपनी स्थापना के बाद से, आरएसएस ने कभी भी जाति के आधार पर किसी के साथ भेदभाव नहीं किया है। संघ के स्वयंसेवक हमेशा 'समता', 'ममता' और 'समरसता' में विश्वास करते हैं, जो भौतिक और भावनात्मक रूप से अपनेपन की भावना से जुड़े हैं। आरएसएस ने सत्य का प्रचार करके और इसे जमीनी स्तर पर लागू करके हमारे समाज में अस्पृश्यता और जातिगत भेदभाव को दूर करने के लिए बड़े प्रयास किए हैं। 100 वर्षों से, आरएसएस और संबद्ध संस्थानों और संगठनों ने समाज के प्रत्येक वर्ग को प्यार और करुणा के साथ ऊपर उठाने का काम किया है।

डॉ. आम्बेडकर, श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी और आरएसएस : डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर के अनुसूचित जाति महासंघ के दलित नेताओं के एक समूह ने एक बार उनसे पूछा कि उन्होंने ब्राह्मण दत्तोपंत ठेंगड़ी को महासंघ का महासचिव क्यों बनाया है। जब बाबा साहब ने यह सुना, तो उन्होंने कहा, 'जिस दिन तुममें से कोई भी ठेंगड़ी से बड़ा दलित बन जाएगा, मैं तुम्हें महासंघ का महासचिव बना दूंगा।' ये कथन दत्तोपंत ठेंगड़ी पर उनके विश्वास को दर्शाते हैं, जो संघ प्रचारक और बीएमएस के अध्यक्ष थे और जिन्होंने 1952 से 1956 तक उनके साथ मिलकर काम किया था।

बाबा साहब आरएसएस के बारे में पूरी तरह से जानकार थे। 1935 में, उन्होंने पुणे में महाराष्ट्र के पहले आरएसएस संघ शिक्षा वर्ग का दौरा किया। तब उनकी मुलाकात डॉ. हेडगेवार से हुई। बाबासाहेब एक निजी यात्रा पर दापोली गए थे। फिर वे स्थानीय संघ शाखा में गए और स्वयंसेवकों से खुलकर चर्चा की। 1939 में, बाबासाहेब ने पुणे में संघ शिक्षा वर्ग का दौरा किया और डॉ. हेडगेवार के साथ स्वयंसेवकों से बातचीत की। महात्मा गांधी की हत्या के बाद आरएसएस पर लगे गैरकानूनी प्रतिबंध को खत्म करने में भी बाबासाहेब ने अहम भूमिका निभाई थी। सितंबर 1949 में श्री गुरुजी ने औपचारिक रूप से उनके समर्थन के लिए उनका आभार व्यक्त किया।

'स्रोत: डॉ. आम्बेडकर और सामाजिक क्रांति की यात्रा', लोकहित प्रकाशन,

ISSN No. 2581-3528

लखनऊ द्वारा प्रकाशित -

संघ के सरसंघचालकों के विचार और कार्य डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर के विचारों और कार्यों से कैसे मेल खाते थे?

देखिए तीसरे सरसंघचालक बालासाहेब देवरस जी ने अस्पृश्यता के बारे में क्या कहा। अगर जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता को खत्म करना है, तो उन लोगों में बदलाव लाना होगा जो उनमें विश्वास करते हैं। ऐसे लोगों पर हमला करने या उनका मुकाबला करने के बजाय, दूसरा विकल्प हो सकता है। मुझे संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार के साथ काम करने का सौभाग्य मिला। वे कहते थे, 'हमें अस्पृश्यता को मानने या उसका पालन करने की जरूरत नहीं है।' इसी आधार पर उन्होंने संघ की शाखाएँ बनाईं, जो पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों का संग्रह है। उस समय भी ऐसे लोग थे जो विपरीत विचारधारा रखते थे। हालांकि, डॉ. हेडगेवार को भरोसा था कि वे आज नहीं तो कल उनके विचारों से सहमत होंगे। नतीजतन, उन्होंने इस बारे में कोई विरोध नहीं किया, किसी के साथ लड़ाई नहीं की, या किसी के न मानने पर कोई नकारात्मक कार्रवाई नहीं की। क्योंकि उन्हें भरोसा था कि सामने वाले व्यक्ति के इरादे भी अच्छे थे। कुछ गलत अवधारणाओं और आदतों के कारण, वह पहले तो आशंकित हो सकता है, लेकिन पर्याप्त समय के साथ, वह निश्चित रूप से अपनी गलतियों से सीख लेगा। शुरुआती दिनों में, संघ के एक शिविर में कुछ भाई अपने अनुसूचित जाति समुदाय के भाइयों के साथ भोजन करने में झिझकते थे।

बाला साहेब देवरस जी, पुणे वसंत व्याख्यानमाला (1974)

आरएसएस, द्वितीय सरसंघचालक गुरुजी की वीएचपी सम्मेलन में सबसे बड़ी उपलब्धि उपस्थित लोगों को वर्णाश्रम या जाति व्यवस्था को अस्वीकार करने के लिए राजी करना था, और सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करना था हिंदवाः सोदराः सर्व, न हिंदू पतितो भवेत् (सभी हिंदू एक ही गर्भ (भारत माता) से पैदा हुए हैं। नतीजतन, वे एक हैं, और किसी भी हिंदू को अछूत नहीं कहा जाना चाहिए। यह सबसे

डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर के अनुसूचित जाति महासंघ के दलित नेताओं के एक समूह ने एक बार उनसे पूछा कि उन्होंने ब्राह्मण दत्तोपंत ठेंगड़ी को महासंघ का महासचिव क्यों बनाया है। जब बाबा साहब ने यह सुना, तो उन्होंने कहा, 'जिस दिन तुममें से कोई भी ठेंगड़ी से बड़ा दलित बन जाएगा, मैं तुम्हें महासंघ का महासचिव बना दूंगा।'

महत्वपूर्ण सुधारवादी अभियान था जिसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता था, क्योंकि हस्ताक्षरकर्ताओं में सभी शंकराचार्य शामिल थे जो जाति व्यवस्था में कट्टर विश्वास रखते थे। ऐसे व्यक्ति पर 'ब्राह्मणवादी आधिपत्य' थोपने का आरोप लगाना या तो गलत आलोचना है या जानबूझकर किया गया अपप्रचार है।

डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर और हिंदू धर्म : प्रसिद्ध राष्ट्रवादी और गतिशील व्यक्तित्व वाले डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर सभी राष्ट्रीय मुद्दों पर मुखर थे। इस तथ्य के बावजूद कि कम्युनिस्टों और अन्य राजनीतिक ताकतों ने उन्हें हिंदू धर्म के विरोधी के रूप में प्रस्तुत किया है। हालांकि, उन्होंने देश के इतिहास का तिरस्कार नहीं किया; बल्कि, उन्होंने उस समय मौजूद अंधविश्वासी संस्कृति और व्यापक जातिगत भेदभाव का तिरस्कार किया। उन्होंने अपनी पुस्तक 'रिडल्स ऑफ हिंदूइज्म' में यहां तक कहा कि, जहां पश्चिम का मानना है कि उन्होंने लोकतंत्र की स्थापना की, वहीं हिंदू 'वेदांत' में उसी की अधिक प्रमुख और स्पष्ट बातें हैं, जो किसी भी पश्चिमी अवधारणा से पुरानी है।

बाबासाहेब हिंदू विरोधी नहीं थे, लेकिन वे हिंदू धर्म की कई कुप्रथाओं और भेदभावपूर्ण मानदंडों के विरोधी थे। अगर उन्हें हिंदू धर्म से घृणा होती, तो वे इसे और कमजोर करने के लिए इस्लाम या ईसाई धर्म अपना लेते। हालांकि, उन्होंने बौद्ध धर्म को चुना क्योंकि इसके विचार हिंदू धर्म के विचारों के बेहद करीब हैं। हिंदू धर्म के कई दुश्मन उनके हिंदू धर्म विरोधी बयानों की ओर इशारा करते हैं, लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि वे उस समय की प्रतिक्रियाएँ थीं, और प्रतिक्रियाएँ क्षणिक भावनाएँ होती हैं जो किसी के चरित्र या संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को स्थापित नहीं कर सकती हैं। अधिकांश प्रतिक्रियाएँ कुछ प्रथाओं पर आक्रोश से प्रेरित थीं, इसलिए यह दावा करना कि वह हिंदू विरोधी थे, छोटी मानसिकता दिखाता है। हम सकारात्मक बदलाव को प्रभावित करने के लिए अपने परिवार के सदस्यों के लिए प्यार से कठोर शब्दों का प्रयोग करते हैं, जैसा कि डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर ने किया था। उस समय उनकी लोकप्रियता और प्रमुखता ने उन्हें हिंदुओं और भारत को बहुत नुकसान पहुँचाने में सक्षम बनाया था, लेकिन वह एक देशभक्त थे जो सच्चाई से परिचित थे। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि अगर उन्होंने ईसाई धर्म या इस्लाम अपना लिया होता तो क्या परिणाम होते? उन्होंने देखा कि हर धर्म और विचारधारा में दोष होते हैं जिन्हें संबोधित करने और सुधारने की आवश्यकता होती है।

निष्कर्ष : डॉ. आम्बेडकर और डॉ. हेडगेवार ऐसे प्रतीक हैं जिनके दर्शन की आवश्यकता न केवल हमारे राष्ट्र को है, बल्कि पूरे विश्व को है। एकता की शक्ति ही समाज में और सीमाओं के पार शांति ला सकती है। इन दो महान असाधारण डॉक्टरों के दर्शन के अनुसार एकता के मार्ग पर चलने से मानवता का बहुत भला होगा। आइए हम मानवता के मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को दूर करने के लिए एक साथ आगे बढ़ें और भारतीयता के मूल्यों का उपयोग करके राष्ट्र का सामाजिक–आर्थिक निर्माण करें, ताकि हमारे राष्ट्र की महानता को पुनः स्थापित किया जा सके। दो डॉक्टरों के आदर्श भारत और पूरे विश्व में महानता का मार्ग प्रशस्त करेंगे। इस विचारधारा से प्रभावित एकजुट हिंदू धर्म, जाति या पंथ की परवाह किए बिना सभी के साथ अद्भुत संबंध और बंधन बनाएगा। आइए हम इन महान नेताओं के पदचिन्हों पर चलें और अपने देश और दुनिया को अधिक स्वस्थ, अधिक शांतिपूर्ण और समृद्ध बनाएं। मानवता के दोनों डॉक्टरों को प्रणाम। ■

ISSN No. 2581-3528

संघ जैसा मैंने देखा (डॉ. अतुल कोठारी जी से एक विशेष साक्षत्कार)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव मा. डॉ. अतुल भाई जी कोठारी से केशव संवाद पत्रिका की कार्यकारी संपादक डॉ. नीलम कुमारी द्वारा लिए गए विशेष साक्षात्कार में जिन्होंने संघ को व्यक्ति निर्माण का उद्योग बताते हुए तीन ध्येय वाक्यों के माध्यम से देश एवं समाज को बहुत बड़ा संदेश दिया है - 1. समस्या नहीं, समाधान की बात करें 2. मां, मातृभूमि और मातृभाषा का कोई विकल्प नहीं 3. समाज को बदलना है तो शिक्षा को बदलना होगा। प्रस्तुत है साक्षात्कार कुछ प्रमुख अंश -

आपने अपना पूरा जीवन संघ को समर्पित कर दिया। आपने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की जीवन शैली को अपने जीवन में समाहित किया और उसके मार्ग पर चलते हुए शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर भारतीयता को पुनः स्थापित कर भारतीय ज्ञान परम्परा को आगे बढ़ाते हुए भारत को विश्व गुरु बनाने में आप महती भूमिका निभा रहे हैं। सबसे पहले हम आपसे जानना चाहते हैं कि शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास का गठन कब और किस उद्देश्य से हुआ ?

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास का प्रारंभ शिक्षा बचाओ आंदोलन 2 जुलाई 2004 से हुआ और यह किसी एक व्यक्ति ने नहीं किया है बल्कि देश भर के लगभग 90 शिक्षाविद दिल्ली में इकट्ठे हुए थे और उन्होंने शिक्षा बचाओ आंदोलन प्रारंभ किया जो देश की शिक्षा में विसंगतियां और कुरीतियां आ गई थी उसे दूर करने के लिए और उस समय तत्कालीन सरकार ने पाठ्यक्रम में गलत बातों को डालना शुरू कर दिया था जिससे हमारे धर्म, हमारी संस्कृति, हमारे महापुरुष, हमारी परंपराएं और हमारी भाषा सबको अपमानित करने वाली बातें थी इन सबको पाठ्यक्रम लाने का प्रयास किया जा रहा था, तब देश के शिक्षाविदों ने देश में शिक्षा बचाओ आंदोलन शुरू किया। शिक्षा बचाओ आंदोलन स्वतंत्र भारत का एक बहुत सफल आंदोलन माना जाएगा, क्योंकि हमने 12 न्यायालयों में वाद दाखिल किया और वह 12 अलग–अलग केस थे जिनका रिजल्ट शिक्षा बचाओ आंदोलन के पक्ष में आया। तत्कालीन सरकार हमारी बात सुनने के पक्ष में नहीं थी फिर अंत में हमने न्यायालय का सहारा लिया और उसमें हमें सफलता मिली। उसमें हमने चिंतन किया कि सिर्फ विकृतियों और विसंगतियों को दूर करने से समग्र देश की शिक्षा में बदलाव नहीं आएगा तो इसके साथ सकारात्मक कार्य करने की आवश्यकता भी है। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास का 2007 में गठन किया गया जो देश में शिक्षा के नए विकल्प देना, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास का मूल लक्ष्य है। विकल्प की बात इसलिए हमने की क्योंकि किसी भी क्षेत्र में गलत कहना आसान होता है लेकिन विकल्प देना बहुत मुश्किल। इस दिशा में न्यास कार्य कर रहा है।

सिर्फ सिलेबस मात्र को बदलने से काम नहीं चलेगा प्रत्यक्ष प्रेक्टिकल, अनुभव के साथ ही कार्य करना होगा। साथ ही एक ऐसा पाठ्यक्रम तैयार करना होगा, एक प्रतिमान तैयार करना होगा जो बातें देशव्यापी शिक्षा में हो। इस प्रकार का लक्ष्य शिक्षा संस्कृत उत्थान न्यास का है। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास ने अभी जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति आई है उसके क्रियान्वयन पर पूरा ध्यान केंद्रित किया है। वर्षों से वो सारी बातें जिनकी हम मांग कर रहे थे, जो बातें इस शिक्षा नीति में आ गई हैं। अब हम शिक्षानीति को जमीनी स्तर पर, क्रियान्वयन पर, इंप्लीमेंटेशन पर सब मिलकर कार्य करें यह कार्य महत्व का है। भारतीय ज्ञान परंपरा को केंद्रित करके हम जो कार्य कर रहे हैं उसमें भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न विषयों को लेकर आधुनिकता का समन्वय करते हुए देश में एक नई व्यवस्था आए इस दिशा में हम सभी कार्य कर रहे हैं।

आपकी दृष्टि में संघ क्या है?

ISSN No. 2581-3528

संघ का जो मुख्य कार्य है, कहा जा सकता है कि संघ व्यक्ति निर्माण का उद्योग है। संघ ने इस शताब्दी वर्ष तक लाखों ऐसे लोगों का निर्माण किया है जो आज देश के विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व कर रहे हैं। किसी भी क्षेत्र को संघ ने छोड़ा नहीं है। शिक्षा का क्षेत्र हो, आर्थिक क्षेत्र हो, राजनीतिक क्षेत्र हो, कला का क्षेत्र हो, सभी शीर्षस्थ क्षेत्रों में नेतृत्व करने वाले लोग राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक हैं। अर्थात् विभिन्न समूह की बात करें तो वनवासी क्षेत्र है, मजदूरों का क्षेत्र है, विद्यार्थियों का क्षेत्र है, शिक्षा का क्षेत्र है, शिक्षकों का क्षेत्र है। सभी क्षेत्रों में संघ से निकले स्वयंसेवकों ने विभिन्न प्रकार के संगठन खड़े किए हैं। कुछ संगठन तो ऐसे हैं जो अंतरराष्ट्रीय स्तर के संगठन बन गए हैं। जो देश में सुधार के लिए प्रयासरत हैं और समाज में परिवर्तन का नेतृत्व कर रहे हैं। तो ऐसे संघ की एक घंटे की जो शाखा है यह उसका परिणाम है। यह मुख्य कार्य है संघ का मेरी दृष्टि में।

आपकी दृष्टि में संघ का मूल उद्देश्य क्या है?

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मूल उद्देश्य है भारत को परम वैभव पर ले जाना और उसके माध्यम से विश्व कल्याण के मार्ग को प्रशस्त करना यह संघ का मूल उद्देश्य है। राष्ट्र को परम वैभव पर ले जाने के लिए, राष्ट्र का पुनर्निर्माण करने का माध्यम व्यक्ति है, तो ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना जो राष्ट्र को परम वैभव पर ले जाएं और इसके माध्यम से विश्व कल्याण की ओर अग्रसर हों, जो कि हमारी संकल्पना है। ये जो हम वसुधैव कुटुंबकम् की बात करते हैं, उस तक पहुंचना है। इसका उदाहरण हमने कोरोना में भी देखा है, कोरोना में जब हमसे अमेरिका ने कुछ मेडिसिन की मांग की, अमेरिका को वैसे तो कोई मना नहीं कर सकता लेकिन भारत ने कहा कि सबसे पहले हम अपने पड़ोसी देश जो गरीब हैं, हमारे ऊपर निर्भर हैं, उन लोगों का हम सहयोग करेंगे बाद में हम आपको भी मेडिसिन देंगे, तो यह भारत की संकल्पना है। विश्व गुरु बनने की या समृद्धशाली विकसित राष्ट्र बनाने की यही भारत की भी संकल्पना है। भारत को शक्तिशाली सम्पन्न विकसित देश बनाना, भारत को विश्व गुरु तो बनाना है लेकिन भारत को अमेरिका नहीं बनाना है। क्योंकि दुखी, पीड़ित, गरीब देश जनता और लोगों की सेवा करना उनको आगे बढ़ाना, उनका सहयोग करना और विश्व कल्याण के मार्ग से विश्व शांति को पुनः स्थापित करना यह संघ का उद्देश्य है और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पहले अपने देश को खड़ा करना पड़ेगा। पहले हमारा भारत देश खड़ा होगा, हमारे देश के लोग खड़े होंगे तभी तो हमारे देश को वो विश्व गुरु के मार्ग पर अग्रसर करेंगे। और इस दिशा में हम कदम बढ़ा चुके हैं।

संघ की कार्य पद्धति क्या है?

व्यक्ति का निर्माण संघ की कार्य पद्धति के द्वारा ही होता है। व्यक्तियों का निर्माण कैसे हो इसके लिए संघ की एक कार्य पद्धति है और भारत की भी यही कार्य पद्धति रही है।

♦ पहला है सामूहिकता : सामूहिकता के अंदर बात आती है कि कोई भी व्यक्ति बड़ा या छोटा नहीं है और किसी भी संगठन में जितनी सामूहिकता होगी उतनी ही कार्य में सुंदरता बढ़ेगी।

♦ दूसरा है पारस्परिकता : एक दूसरे का सहयोग करना और एक दूसरे का सहयोग करते हुए आगे बढ़ाना यह संघ की कार्य पद्धति है और सभी लोग इसी कार्य पद्धति से आगे बढ़ते हैं।

♦ तीसरा है अनामिकता : संघ का कोई भी व्यक्ति अपने बारे में प्रचार नहीं करता बल्कि यह कहे कि वह कितना भी बड़ा काम क्यों ना करें लेकिन अपना प्रचार कभी नहीं करता। संघ में इतने बड़े–बड़े लोग रहकर चले गए जो नींव के पत्थर रहे परंतु उन्होंने कभी अपने नाम की चिंता नहीं की, कभी अपना प्रचार नहीं किया यही अनामिकता है। और यही संघ की कार्य पद्धति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

♦ चौथा है पारदर्शिता : लोग कहते हैं कि संघ को समझना है, तो हम कहते हैं संघ को समझना है तो शाखा में आइये। शाखा में आने पर किसी पर किसी पर कोई भी प्रतिबंध नहीं है कोई भी व्यक्ति या किसी भी समाज का कोई भी व्यक्ति वहां आ सकता है। तो संघ में पूरी पारदर्शिता है।

♦ पांचवीं है अनौपचारिकता : सिर्फ फॉर्मल या औपचारिक रहने से काम नहीं चलता है। अनौपचारिकता एक महत्वपूर्ण कार्यपद्धति है क्योंकि हम सभी एक परिवार की तरह काम करते हैं और परिवार में कोई औपचारिकता नहीं होती। इस प्रकार की कार्य पद्धति ही संघ का मूल आधार है। इस प्रकार की ही कार्य पद्धति व्यक्तियों की कार्यशैली बननी चाहिए। संघ में इसे कार्य पद्धति और स्वयंसेवकों में इसको कार्यशैली कहते हैं। और इस प्रकार की कार्यशैली से संघ में स्वयंसेवक तैयार होते हैं जो संघ के लिए समाज जीवन में सही नेतृत्व करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में दिखाई दे रहे हैं।

आपातकालीन स्थिति में आप संघ को और संघ के स्वयंसेवकों को कैसे देखते हैं?

कई लोग जो संघ से परिचित नहीं हैं या दूर से संघ को देखते हैं या अनावश्यक विरोध करते हैं तो वह कहते हैं कि संघ ने इस देश के लिए क्या किया है? मैं कहना चाहूंगा कि संघ की इस सौ वर्षों की यात्रा में, जीवन के हर मोड़ पर आपको संघ खड़ा दिखाई देता है। चाहे वह बाढ़ आई हो, आपदाएं आई हों, चाहे विदेशी आक्रमण हुआ हो, चाहे भूकंप आया हो, चाहे एक्सीडेंट हुआ हो इस प्रकार की विभिन्न आपदाओं में संघ का स्वयंसेवक हमेशा खड़ा दिखाई देता है। कोरोना में आपने देखा होगा कि देश में सभी लोग

ISSN No. 2581-3528

भयभीत थे कि क्या करें और क्या ना करें ऐसे में भी अपनी जान का जोखिम उठाते हुए संघ के लाखों–लाखों स्वयंसेवकों ने देश भर में कोरोना से पीड़ित लोगों की सेवा की और अनेक प्रकार से सेवा के कार्य किये। समाज में एक आत्मविश्वास जागृत किया कि इस विपरीतकालीन स्थिति में भी हम खड़े हो सकते हैं और आगे बढ़कर कार्य कर सकते हैं। इस स्थिति में, कोई भी स्थिति में किसी भी परिस्थिति में चाहे वह आपातकालीन स्थिति ही क्यों नहीं हो संघ का स्वयंसेवक हमेशा खड़ा दिखाई देता है।

एक अच्छे स्वयंसेवक में क्या गुण होने चाहिए?

सबसे पहले तो एक अच्छे स्वयंसेवक का सर्वोत्तम गुण होता है उसका उत्कृष्ट चरित्र। दूसरा उसकी रग–रग में कण–कण में राष्ट्रभक्ति के संस्कार होते हैं। संघ के स्वयंसेवक की यही मुख्य पहचान है। इसके कारण ही देश भर में संघ की विश्वसनीयता बनी हुई है। राष्ट्रभक्त होना, समाज के प्रति संवेदनशील होना, चरित्रवान होना, इस प्रकार सभी की छवि को आगे बढ़ाने का कार्य संघ के स्वयंसेवक करते हैं।

संघ के विभिन्न वैचारिक संगठनों का क्या उद्देश्य है?

समाज परिवर्तन का जो यह व्यापक कार्य है इसमें प्रमुख रूप से तीन बातें आवश्यक हैं पहली बात व्यक्ति निर्माण की जो संघ का आधारभूत कार्य है। दूसरी बात है जन आंदोलन खड़ा करना, आंदोलन का तात्पर्य रास्ते पर रैली निकालना, या मात्र धरना देना ही नहीं है बल्कि एक वैचारिक आंदोलन खड़ा करना है और व्यवस्था परिवर्तन करना है। तो संघ के विभिन्न वैचारिक संगठन पूर्ण रूप से स्वायत्त एवं स्वतंत्र हैं। बहुत बड़ी बात है संघ की शाखा से निकले स्वयंसेवक सेवा के कार्य कर रहे हैं परंतु वह पूर्ण रूप से स्वायत्त एवं स्वतंत्र हैं। संघ जैसा आदेश देता है वैसा वह कार्य करते हैं उनके अंदर मूल संस्कार हैं, और राष्ट्रभक्ति के संस्कार हैं समाज के लिए संवेदनाएं हैं। भारत को परम वैभव ले जाने वाला यह मूल संस्कार को दिए गए हैं इसके आधार पर विभिन्न क्षेत्रों में जिन–जिन क्षेत्रों में स्वयंसेवक काम कर रहे हैं उन–उन क्षेत्रों में भारतीयता का जो मूल आधारभूत चिंतन है उस चिंतन को आधार बनाते हुए आज की आधुनिकता से समन्वय बनाते हुए नई व्यवस्था देना यह कार्य संघ के स्वयंसेवक कर रहे हैं। अगर मैं कहूं कि मैं शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहा हूं तो शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास में हम सब यही कार्य कर रहे हैं कि

जैसे भारतीय ज्ञान परंपरा हमारी संवाद परम्परा है तो उसको आधार बनाते हुए देश की शिक्षा में आधारभूत बदलाव लाने के उद्देश्य से परंपरागत एवं आधुनिकता का समावेश करते हुए हम लोग यह कार्य कर रहे हैं। तो इस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न स्वयंसेवक इसी प्रकार से कार्य कर रहे हैं संघ का मूल चिंतन अलग नहीं है भारतीय चिंतन सत्य सनातन चिंतन ही देश का चिंतन है और यही संघ का चिंतन भी है कुछ लोग देश का चिंतन, संघ का चिंतन यह अलग अलग मान लेते हैं जबकि दोनों का चिंतन एक ही है जिसमें भारत को परम वैभव पर ले जाते हुए विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करना यही संघ का और यही भारतीय चिंतन है।

आपका संघ का कोई ऐसा संस्मरण जिससे संघ को समझने में आपको बहुत सहायता मिली हो?

वैसे तो संघ में छोटी उम्र में जब शाखा में जाते थे तो खेलते थे बड़ा आनंद आता था और मित्र भी बनते थे, पर ऐसा समय तब आया जब संघ को बहुत निकट से जानने का अवसर प्राप्त हुआ जब गुजरात में मोरवी में एक बड़ी अनर्थ हुई। जब 1979 में बाढ़ आई उस समय हम काम के लिए वहां गए हुए थे तो जो उस समय जो चित्र दिखा जिसमें हम लोग भी काम में सम्मिलित थे इस प्रकार की बाढ़ आई कि कई व्यक्तियों की मृत देह पेड़ों पर लटकी हुई थीं। और दो चार पांच दिन हो गया तो उनमें से दुर्गंध भी आती थी ऐसी स्थिति में प्रशासन के लोग भी वहां नहीं जा रहे थे ऐसी जगह संघ के स्वयंसेवकों ने जाकर सारे काम किए, तो यह संघ है सही अर्थों में समाज के सुख–दुख में, हर क्षण, हर पल, हर आपत्ति विपत्ति में संघ का स्वयंसेवक आपको तत्पर खड़ा दिखाई देगा।

एक बड़े लेवल पर हमने यह अनुभव किया छोटे–मोटे लेवल पर तो हम अनुभव करते ही हैं लेकिन महीनों तक, वर्षों तक काम किया। यहां संघ में ऐसी अनेक घटनाएं हैं एक घटना और है जब कच्छ में भूकंप आया तो उस समय मैं ट्रेन में था जब भूकंप आया यानी ट्रेन में झटकों का पता नहीं चलता और मैं दक्षिण की तरफ था तो इसलिए वहां भूकंप का इतना ज्यादा प्रभाव नहीं था। जब मैं गुजरात पहुंचा जब मैं सूरत उतरा तो समझ में आया कि वहां पर कुछ बड़ा हुआ है मैं फिर संघ के कार्यालय पर गया, वहां पर बातचीत की, वहां के प्रचारक से मिला। और पाया कि जहां पर ज्यादा असर था तो वहां पहले काम शुरू हो गया था। जब से भूकंप आया तो उसी दिन से हजारों स्वयंसेवक काम में लग गए थे। मैं वहां

ISSN No. 2581-3528

सारा देखकर अहमदाबाद गया और अहमदाबाद से दूसरे दिन कच्छ में गए तो वहां जाकर देखा कि अंजार जिला संघचालक जी जो अपने काम में लगे हुए थे, उनसे नमस्कार हुई बातचीत हुई वह थोड़ा काम में व्यस्त थे दूसरे स्वयंसेवक वहां खड़े थे उन्होंने बताया कि आपको मालूम है क्या? हमने पूछा बताइए तो उन्होंने बताया कि जिला संघचालक की दोनों बेटियां इस भूकंप की भेंट चढ़ गई।

माननीय जिला संघचालक जी व उनकी पत्नी ध्वज वंदन के लिए स्कूटर से जा रहे थे तो अचानक भूकंप आ गया और भूकंप आने से वह स्कूटर से गिर गए भूकंप लगभग 5 से 7 मिनट में पूरा हो गया तो वह तुरंत घर की तरफ वापस आए। वापस आकर देखा तो उनका पूरा घर ध्वस्त हो गया था और उनकी दोनों बेटियां उसी मलबे में नीचे दब चुकी थी उन दोनों की मृत्यु हो गई थी। तुरंत उन्होंने वहां सफाई करके दोनों का पड़ोसियों की सहायता से अंतिम संस्कार किया। और पुनः अपने सेवा के कार्य में लग गए। ऐसी हजारों घटनाएं जो देश में घटित होती हैं तब संघ क्या है, सही मायने में समझ में आता है।

संघ में प्रचार विभाग की आवश्यकता क्यों पड़ी?

मेरी दृष्टि से संघ के कई कार्य हैं उसमें प्रचार विभाग बहुत महत्वपूर्ण है। विभिन्न क्षेत्रों में जो काम चल रहा है वह पूर्णतया स्वतंत्र है। संघ का मूल कार्य जैसा कि संघ के बारे में बहुत भ्रम फैलाया गया है तो इस दृष्टि से समाज का हर व्यक्ति स्ययं सेवक नहीं बन सकता। हर व्यक्ति शाखा पर नहीं जा सकता लेकिन उनके मन में गलत धारणा फैली हुई है उनकी गलत धारणा को कम करने के लिए प्रचार विभाग की आवश्यकता पड़ी। और आज की इस दुनिया में बिना प्रचार के काम नहीं चलेगा। आज के समय में सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि दुनिया में भी संघ ने सेवा के अनेक कार्य किए हैं। जैसे यूक्रेन और रूस के युद्ध में स्वयंसेवकों ने बहुत से सेवा के कार्य किए यह इसके बिना मीडिया की दुनिया में बात पता नहीं चलेगी, बात नहीं फैलेगी इस प्रकार मीडिया की प्रचार के कार्य में बड़ी भूमिका है। दूसरा संघ का पूरा काम सकारात्मक है, पॉजिटिव है। और आज क्या है कि कई बातों में मीडिया में बहुत कुछ नकारात्मकता दिखाई देती है। जैसे दुनिया में समाचार जाता है बहुत गलत हो रहा है और कुछ अच्छा नहीं हो रहा है। जबकि ऐसा नहीं है बहुत कुछ अच्छा भी हो रहा है इसलिए नेगेटिविटी या यूं कहे की नकारात्मकता को कम करने के लिए प्रचार माध्यमों का बहुत महत्व है और प्रचार माध्यमों के द्वारा ही इस सोशल मीडिया में फैली हुई नकारात्मकता को दूर किया जा सकता है क्योंकि संघ का कार्य है सकारात्मकता को बढ़ावा देना है। इस प्रकार से प्रचार विभाग जो मुख्यतः मैं यहां पर सोशल मीडिया की बात कर रहा हूं सोशल मीडिया पर कोई प्रतिबंध नहीं होता है इसलिए पॉजिटिविटी को बढ़ावा देने के लिए और नेगेटिविटी को कम करने के लिए प्रचार विभाग की नितांत आवश्यकता है।

आप प्रेरणा मीडिया के माध्यम से हमारे पाठकों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

मूल बात यह है कि कोई भी कार्य हम करें तो हमारी सोच सकारात्मक होनी चाहिए। जैसे न्यास में हमारा ध्येय वाक्य है कि 'समस्या नहीं समाधान की बात करें' तो इतने बड़े देश में इतने वर्षों में समस्या तो होगी पर हम सभी को समस्याओं के समाधान के लिए हम सबको मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है। जो सारी व्यवस्था है उसको ठीक करने का माध्यम एक ही है वह है शिक्षा। कौन सा ऐसा परिवार है जिसमें जो शिक्षा से जुड़ा हुआ नहीं है। शिक्षा एक आधारभूत विषय होना चाहिए। भारत जब विश्व गुरु था तो हमारी शिक्षा उस प्रकार की थी। यदि हम चाहते हैं कि हमारा नागरिक सुसंस्कृत हो, समाज मूल्यवान हो और राष्ट्र समृद्ध शक्तिशाली विकसित हो। लेकिन वैसी शिक्षा व्यवस्था तो नहीं है तो जब तक शिक्षा उस प्रकार की नहीं होगी तब तक वैसा नागरिक, वैसा समाज और वैसा राष्ट्र नहीं बन सकता। इस दृष्टि से इस दिशा में सकारात्मक सोच के साथ हम सबको मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है। ठीक है सभी संगठन प्रत्यक्ष रूप से कार्य नहीं कर सकते परंतु अपने–अपने स्तर पर शिक्षा के सुधार के लिए तो हम कार्य कर ही सकते हैं। इस दिशा में शिक्षा प्रत्येक समाज, राष्ट्र और व्यक्ति का विषय होना चाहिए। यह न केवल समाज, सरकार बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को भी अपने स्तर पर शिक्षा सुधार में योगदान देना चाहिए तभी जैसा देश हम बनाना चाहते हैं वैसा देश हम बना सकते हैं।

बहुत बहुत धन्यवाद भाईसाहब। संघ जैसा आपने देखा संघ का पावन उद्देश्य, संघ की कार्यपद्धति, संघ के आनुषांगिक संगठन, आपातकालीन स्थिति में संघ एवं स्वयंसेवकों की भूमिका उनके गुणों के बारे में आपने विस्तार से बताया।

जिससे एक बात तो बिल्कुल स्पष्ट है कि संघ को लेकर लोगों में जो भ्रांतियां हैं वो निश्चित रूप से दूर होंगी और आपने सही कहा कि संघ को समझना है तो संघ की शाखा में आइए और भारत को परम वैभव पर ले जाकर विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने के पावन उद्देश्य को तत्पर संघ के समर्पित, निष्ठावान, चरित्रवान, राष्ट्रभक्त स्वयंसेवकों के आचरण को देखिए तब आपको सही अर्थों में संघ क्या है परिचय होगा। वास्तव में सत्य ही है कि–

संघ साधना की अभिव्यक्ति।
आचरण से करते हम।।
सेवा भावी हो समाज ।
तो होगा अपना देश सबल।।
शिक्षित, सुसंस्कृत हो अपना समाज ।
तो होगा अपना देश महान।। ■

ISSN No. 2581-3528

पर्यावरण संरक्षण में जैविक कृषि की भूमिका

अनुराग शुक्ला
प्रवक्ता रुद्रा इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी
नानपुर, हापुड़

भूमिका : भारतवर्ष की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मूल स्तंभ कृषि है, जो आज भी अधिकांश किसानों की आय का प्रमुख साधन बनी हुई है। हरित क्रांति के पश्चात बढ़ती जनसंख्या और खाद्यान्नों की मांग को पूरा करने के लिए रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अत्यधिक प्रयोग आरंभ हुआ। प्रारंभ में इससे उत्पादन में तीव्र वृद्धि हुई, परन्तु दीर्घकाल में इसने प्रकृति के जैविक और अजैविक संतुलन को बाधित किया। भूमि की उर्वरता घटने लगी, पर्यावरण प्रदूषित हुआ, और खाद्य पदार्थों में विषैले तत्वों की उपस्थिति से मानव स्वास्थ्य पर भी गंभीर प्रभाव पड़ा।

इन सभी समस्याओं के समाधान के रूप में टिकाऊ और समावेशी कृषि पद्धति की आवश्यकता महसूस की गई, जिसे हम"जैविक खेती" के नाम से जानते हैं। यह पद्धति पारंपरिक और प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग पर आधारित है और वर्तमान युग की प्रमुख आवश्यकता बन चुकी है। भारत सरकार ने भी इस दिशा में अनेक योजनाओं और नीतियों के माध्यम से जैविक खेती को बढ़ावा दिया है।

जैविक खेती की परिभाषा एवं विधि : जैविक खेती वह कृषि पद्धति है जिसमें रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों एवं खरपतवारनाशी दवाओं के स्थान पर प्राकृतिक तत्वों जैसे गोबर, गोमूत्र, नीम की पत्तियाँ, लहसुन, जीवाणु खाद आदि का उपयोग किया जाता है। यह पद्धति पर्यावरण–संवेदनशील, मृदा–स्वास्थ्य के अनुकूल और जैव विविधता को बनाए रखने वाली होती है। प्राचीन काल में भी इसी प्रकार की खेती की जाती थी जो पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित बनाए रखती थी। इस पद्धति में जल, मृदा और वायु जैसे प्राकृतिक तत्व प्रदूषित नहीं होते थे और मानव स्वास्थ्य भी सुरक्षित रहता था।

जैव उर्वरकों का उत्पादन और उपयोगिता : वर्तमान में भारत में 18,500 टन जैव उर्वरकों की उत्पादन क्षमता के साथ 114 उत्पादक कार्यरत हैं। भारत को लगभग 3.5 से 5 लाख टन जैव उर्वरकों

की आवश्यकता है। जैव उर्वरकों के चार प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं–

– राइजोबियम (Rhizobium) : दालों, तिलहन, चारा फसलों के लिए

–एजैटोबैक्टर (Azotobacter) : गेहूँ, चावल, सब्जियाँ, फल

– एजोस्पिरिल्लम (Azospirillum) : चावल और गन्ना

–फास्फेट सोलुबिलाइजिंग बैक्टीरिया : सभी फसलों के लिए

इनकी उपयोगिता को NBDC और ICRISAT जैसी प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा प्रमाणित किया गया है। उदाहरण के लिए, हरियाणा में किए गए क्षेत्रीय परीक्षणों में कपास और गेहूं की उपज में 3.25 प्रतिशत तक की वृद्धि दर्ज की गई।

जैविक खेती को बढ़ावा देने हेतु सरकारी प्रयास : 1994 में "सेवाग्राम घोषणा" के बाद भारत सरकार ने जैविक खेती को बढ़ावा देने हेतु कई योजनाएं लागू कीं। जैव उर्वरकों के उत्पादन और प्रसार के लिए गाजियाबाद में राष्ट्रीय जैव उर्वरक विकास केंद्र तथा छह क्षेत्रीय केंद्रों की स्थापना की गई।

सरकार ने निजी क्षेत्रों को भी प्रोत्साहन देने के लिए अनुदान राशि 13 लाख से बढ़ाकर 20 लाख रुपये प्रति इकाई कर दी। इसके अलावा, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (RKVY) के अंतर्गत रासायनिक आदानों पर निर्भरता कम करने और जैविक खेती को बढ़ावा देने के प्रयास किए जा रहे हैं।

भारत में जैविक खेती को प्रोत्साहन: परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY) और मिशन ऑर्गेनिक वैल्यू चेन डेवलपमेंट (MOVCDNER)।

भारत सरकार द्वारा देशभर में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए दो प्रमुख योजनाएं चलाई जा रही हैं–परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY) और उत्तर–पूर्वी क्षेत्र के लिए मिशन ऑर्गेनिक वैल्यू चेन डेवलपमेंट (MOVCDNER) इन योजनाओं का उद्देश्य न केवल किसानों को जैविक कृषि की ओर प्रेरित करना है, बल्कि उन्हें उत्पादन से लेकर विपणन तक हर स्तर पर आवश्यक प्रशिक्षण, संसाधन और सहायता प्रदान करना भी है।

योजनाओं का उद्देश्य और दृष्टिकोण:

दोनों योजनाएं प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित एकीकृत एवं जलवायु अनुकूल टिकाऊ कृषि प्रणाली को बढ़ावा देती हैं। इनका मुख्य उद्देश्य है–

– मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखना एवं बढ़ाना।

– प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण

–खेत में पोषक तत्वों का पुनर्चक्रण सुनिश्चित करना।

– बाहरी इनपुट पर किसानों की

ISSN No. 2581-3528

निर्भरता को घटाना।

प्रभाव और कवरेज : वर्ष 2015–16 से अब तक लगभग 59.74 लाख हेक्टेयर भूमि जैविक खेती के अंतर्गत लाई जा चुकी है। वर्ष 2023–24 तक, PKVY और MOVCDNER (NPOP/PGS-India के तहत) के माध्यम से जैविक खेती के तहत कवर किए गए क्षेत्र का राज्यवार विवरण अनुलग्नक–I में उपलब्ध है।

वित्तीय सहायता का विवरण : PKVY योजना :

3 वर्षों के लिए कुल ₹31,500/हेक्टेयर की सहायता :

– ₹15,000/हेक्टेयर–कृषि/गैर– कृषि जैविक इनपुट के लिए (DBT के माध्यम से)

–₹4,500/हेक्टेयर–विपणन, पैकेजिंग, ब्रांडिंग और मूल्य संवर्धन

– ₹3,000/हेक्टेयर– प्रमाणन और अवशेष विश्लेषण

–₹9,000/हेक्टेयर–प्रशिक्षण, हैंडहोल्डिंग एवं क्षमता निर्माण

MOVCDNER योजना – 3 वर्षों में कुल ₹46,500/हेक्टेयर की सहायता

– ₹15,000/हेक्टेयर– DBT के रूप में किसानों को सीधे सहायता

– ₹32,500/हेक्टेयर– जैविक इनपुट और बुनियादी ढांचे के लिए

– योजना के तहत FPOs (किसान उत्पादक संगठन) के गठन को भी बढ़ावा दिया जाता है।

दोनों योजनाओं में किसान अधिकतम 2 हेक्टेयर क्षेत्र के लिए सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

प्रमाणीकरण प्रणाली : जैविक उत्पादों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु दो प्रकार की प्रमाणीकरण प्रणाली विकसित की गई हैं–

1. राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम (NPOP) :

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत, तृतीय पक्ष प्रमाणन प्रणाली, विशेष रूप से निर्यात को ध्यान में रखते हुए।

2. पीजीएस–इंडिया (PGS-India) :

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत,हितधारकों द्वारा पारस्परिक सत्यापन आधारित प्रणाली, जो छोटे किसानों के लिए सुलभ है।

प्रशिक्षण, प्रचार और विपणन : PKVY के तहत :

प्रमाणीकरण–₹3,000/ हेक्टेयर (3 वर्षों में)

प्रशिक्षण एवं हैंडहोल्डिंग – ₹7,500/ हेक्टेयर

विपणन और प्रचार– ₹4,500/ हेक्टेयर

MOVCDNER के अंतर्गत :

प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण और प्रमाणन – ₹10,000/हेक्टेयर

जैविक खेती वह कृषि पद्धति है जिसमें रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों एवं खरपतवारनाशी दवाओं के स्थान पर प्राकृतिक तत्वों जैसे गोबर, गोमूत्र, नीम की पत्तियाँ, लहसुन, जीवाणु खाद आदि का उपयोग किया जाता है। यह पद्धति पर्यावरण-संवेदनशील, मृदा-स्वास्थ्य के अनुकूल और जैव विविधता को बनाए रखने वाली होती है

जैविक खेती और पर्यावरण संरक्षण : जैविक खेती के प्रसार से देशी बीजों और मोटे अनाजों को नया जीवन मिला है। इनका सेवन स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत लाभकारी है, विशेषकर मधुमेह और पाचन संबंधी रोगों में। जैविक अनाज स्वादिष्ट, पौष्टिक और सुरक्षित होते हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी जैविक उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ रही है। जैविक खेती के माध्यम से किसान कम लागत में अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं और वैश्विक बाज़ार में प्रतिस्पर्धा में बने रह सकते हैं। जैविक खेती न केवल पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के संरक्षण का सशक्त माध्यम है, बल्कि यह किसानों की आय में वृद्धि तथा प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग का भी मार्ग प्रशस्त करती है।

टिकाऊ कृषि : स्थायी खेती का मतलब है खाद्य, फसल और पशु उत्पादों को ऐसे तरीके से बढ़ाना जो लोगों की सेहत के लिए अच्छा हो और किसानों के लिए लाभकारी भी। यह जैविक खेती से प्रेरित है, और इसमें पारंपरिक खेती के साथ–साथ पुनः recycling के तरीके भी शामिल हैं। जैसे, किसान फसल के बचे हुए या जानवरों के गोबर को उर्वरक में बदल सकते हैं, जिससे मिट्टी की गुणवत्ता बढ़ती है।

टिकाऊ कृषि : एक नवीनीकरण का मार्ग : कृषि मानव सभ्यता की आधारशिला है, और सदियों से किसान पारंपरिक विधियों के माध्यम से फसलें उगाते आ रहे हैं। लेकिन हरित क्रांति के आगमन के साथ, जब रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग तेजी से बढ़ा, तो सामान्य कृषि पद्धतियों का प्रचलन भी बढ़ गया। इसके परिणामस्वरूप, मिट्टी की उर्वरता में धीरे–धीरे कमी आने लगी। रासायनिक संसाधनों के अंधाधुंध उपयोग ने न केवल मिट्टी की सेहत को हानि पहुंचाई, बल्कि समग्र पर्यावरण को भी गंभीर रूप से प्रभावित किया।

स्थायी कृषि का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू जल प्रबंधन में सुधार है। वर्षा के पानी को संग्रहित करने और सिंचाई के लिए टिकाऊ विधियों को अपनाने से, हम जल संकट को भी हल कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, ये विधियाँ जलवायु परिवर्तन के प्रति हमारी लचीलापन को भी बढ़ाने में मदद करती हैं। वास्तव में, स्थायी कृषि का लक्ष्य केवल उपज को बढ़ाना नहीं है, बल्कि एक स्वस्थ और संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण भी करना है। यह न केवल अगली पीढ़ी के लिए एक स्वास्थ्यवर्धक वातावरण सुनिश्चित करता है, बल्कि किसानों को भी आर्थिक रूप से सशक्त बनाता है। अंततः, हमें यह समझना चाहिए कि कृषि का अर्थ केवल खाद्य उत्पादन तक सीमित नहीं है। यह हमारे पर्यावरण, समाज और अर्थव्यवस्था के अनगिनत पहलुओं से जुड़ा हुआ है। ■

ISSN No. 2581-3528

अंतरराष्ट्रीय मीडिया में हिन्दुत्व

डॉ. दीपा रानी
पोस्ट डॉक्टरल शोधार्थी

हिन्दुत्व शब्द का पहली बार प्रयोग 1870 के मध्य में बंकिम चंद्र चट्टोपध्याय के उपन्यास आनंदमठ में किया गया था लेकिन इस शब्द का पुरजोर तरीके से इस्तेमाल 1920 के दशक में स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर द्वारा किया गया। वीर सावरकर के अनुसार हिन्दुत्व का मतलब हिंदू सभ्यता और हिंदू जीवन पद्धति में गर्व करने वालों से है।

हिन्दुत्व मात्र एक शब्द ही नहीं अपितु यह स्वयं में सम्पूर्ण ग्रंथ है। यह कई परम्पराओं और दर्शनों का संग्रह है जिसकी सांस्कृतिक जड़ें और रीतिरिवाज 4000 वर्षों से भी अधिक पुरानी है। हिन्दुत्व जीवन जीने की एक ऐसी विधा है जो समस्त मानव जाति ही नहीं बल्कि सारे संसार में रहने वाले सभी प्राणियों के लिए लाभप्रद, जीवनप्रद और कर्तव्यसूचक है। हिंदुत्व कोई साम्प्रदायिक अवधारणा नहीं है बल्कि यह हमारे राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना का भी प्रतीक है। यह शुद्ध आचरण से जीवन जीने का दर्शन है। हिन्दुत्व सदैव से वसुधैव कुटुंबकम् के मत को जीवन में अपनाने एवं अनुसरण करने की प्रेरणा देता है। यह हमेशा से ही सहिष्णु रहा है और अनौपचारिक गतिविधियों जैसे आतंकवाद, क्रूरता, विध्वंश से अलग जियो और जीने दो के सिद्धांत का पक्षधर रहा है।

हिन्दुत्व वृहदारण्यक उपनिषद् के प्रसिद्ध मंत्र – सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे भवन्तु निरामया। सर्वे भद्राणिपश्यन्तु, मा कश्चिद् दुख भाग्भवेत् की अवधारणा से प्रेरित है। यह सृष्टि के सभी प्राणियों के सुख, मंगल और निरोगी रहने की कामना करता है ।

हिन्दुत्व शब्द का पहली बार प्रयोग 1870 के मध्य में बंकिम चंद्र चट्टोपध्याय के उपन्यास आनंदमठ में किया गया था लेकिन इस शब्द का पुरजोर तरीके से इस्तेमाल 1920 के दशक में स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर द्वारा किया गया। वीर सावरकर के अनुसार हिन्दुत्व का मतलब हिंदू सभ्यता और हिंदू जीवन पद्धति में गर्व करने वालों से है। वीर सावरकर के हिंदुत्व की परिभाषा को इन पंक्तियों से समझा जा सकता है ।

आसिन्धु सिन्धु पर्यंता यस्य भारत भूमिका ।
पितृभू: पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरिति स्मृतः ।।

इसके अनुसार सिन्धु नदी के मूलस्थान से कन्याकुमारी के समुद्रतट तक वो हिंदू हैं जो भारत को अपनी भूमि मानते हैं। जिसमें उनके पूर्वज रहते थे। साथ ही वह भूमि जिसे वह पुण्य भूमि मानते थे। उनके लिए भारत पितृ भूमि और पवित्र भूमि दोनों है। ऐसा कहें तो गलत नहीं होगा हिन्दुत्व की विचारधारा को प्रतिष्ठित करने का कार्य सबसे पहले वीर सावरकर ने किया था। हिन्दुत्व को मानने वाले बहुत लोग उन्हें हिन्दुत्व के पिता के नाम से भी परिभाषित करते हैं। उनका कहना था कि हिन्दुत्व सोच में मजहबी कट्टरता और संकीर्णता नहीं है ।

अंतरराष्ट्रीय शब्द कोश और केरीब्राउन के अनुसार हिन्दुत्व एक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक विश्वास का समावेशी मिश्रण है। जो मानवता, धर्म, कर्म, अध्यात्म, अहिंसा, संस्कार, मोक्ष और पुनर्जन्म पर विश्वास करता है ।

बड़े लम्बे अरसों से विदेशी मीडिया की सोच में भारतीय दर्शन, भारत व उसके हिन्दुत्व को लेकर, उनके लेखन में अर्धसत्य व नकारात्मकता देखने को मिलती रही है। फिर चाहे वह पड़ोसी देशों के रिश्ते को लेकर हो या भारतीय मूल में रह रहे कुछ विशेष समुदायों को लेकर, हमेशा ही अंतरराष्ट्रीय मीडिया ने दोहरे चरित्र की भूमिका

ISSN No. 2581-3528

पेश की है। भारत जैसे राष्ट्र और हिन्दुत्व से सम्बन्धित खबरों के तथ्यों को जांच किए बिना अपने मीडिया प्लेटफार्म से प्रसारित करने का काम करती रही है। अंतरराष्ट्रीय मीडिया ने हमेशा से ही भारत की शुद्ध सरल जीवन शैली को कभी भी प्राथमिकता नहीं दी, वहीं पाश्चात्य शैली को सर्वोपरि माना ।

हाल ही में कुछ महीनों से विभिन्न देशों के बीच चल रहे संघर्षों की वजह से अंतरराष्ट्रीय मीडिया का ध्यान भारत की संस्कृति, सौहार्द, विचारधारा और सभ्यता की ओर केंद्रित हुआ है। अब अंतरराष्ट्रीय मीडिया महसूस कर रही है कि हिन्दुत्व संस्कृति जिस शान्तिप्रिय जीवन एवं सौहार्द की बात करता है शायद वही असल जीवन जीने की कला का सन्मार्ग है। इसका श्रेय कहीं ना कहीं इस समय की मौजूदा सरकार को जाता है जिसने अपने कुशल राजनीतिक नेतृत्व की वजह से विश्वपटल पर अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को कुशलतापूर्वक स्थापित करने का प्रयास किया है। आज से कुछ वर्षों पहले 2 जून 2014 को भारत के योग को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में स्वीकृति दी गई जिसकी अंतरराष्ट्रीय मीडिया में पुरजोर सराहना हुई और मीडिया ने इसे सभी के स्वास्थ्य के लिए कल्याणकारी बताया। हाल ही में कुछ वर्षों से अंतरराष्ट्रीय मीडिया में भारत और हिंदुत्व के प्रति खबरों के नजरिए में बदलाव देखने को मिला है। अब खबरों के प्रसारण में हिन्दुत्व के प्रति नकारात्मक पहलू के साथ सकारात्मकता को भी स्थान दिया जाने लगा है। भारत द्वारा आयोजित जी–20 की शानदार अध्यक्षता और इसके विषय वस्तु 'वसुधैव कुटुंबकम्' एवं हाल ही में आयोजित महाकुंभ की कवरेज भारत के पक्ष में देखी गई।

अंतरराष्ट्रीय मीडिया (वॉशिंगटन/लंदन) ने कहा कि जी20 शिखर सम्मेलन में रूस–यूक्रेन युद्ध पर प्रमुख मतभेदों को दूर करते हुए सदस्य देशों को नई दिल्ली लीडर्स समिट डिक्लेरेशन को अपनाया जाना प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लिए एक अप्रत्याशित सफलता रही।

न्यूयॉर्क टाइम्स ने शिखर सम्मेलन के दौरान भारत को मध्य पूर्व और यूरोप से जोड़ने के लिए एक रेल और नौवहन गलियारा परियोजना की घोषणा पर भी प्रकाश डाला। उसने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने शिखर सम्मेलन के दौरान अपना अधिकतर समय नरेन्द्र मोदी के साथ अपने संबंधों को और मजबूत करने में बिताया।

'सीएनएन' ने कहा, घोषणापत्र शिखर सम्मेलन के मेजबान भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लिए अप्रत्याशित सफलता के समान है।

बीबीसी ने कहा कि ऐसा प्रतीत होता है कि घोषणापत्र पश्चिम और रूस दोनों को सकारात्मकता खोजने का रास्ता दिखाने के लिए डिजाइन किया गया।

इसी प्रकार कुंभ आयोजन को लेकर अमेरिकी अखबार वाल स्ट्रीट ने लिखा कि अमेरिका की जनसंख्या से ज्यादा तीर्थयात्रियों ने आस्था के महाकुंभ में शिरकत की ।

सीएनएन ने लिखा– रंग और आस्था का शानदार नजारा कुंभ में देखने को मिला ।

फ्रांस–24 ने भगदड़ जैसी घटना का शुरुआती चर्चा करते हुए लिखा कि इतनी चुनौतियों के बावजूद भी महाकुंभ मेले का आयोजन शानदार था ।

नेशनल जियोग्राफिक ने लिखा –प्रयागराज में तीर्थयात्री संगम तट पर आस्था की डुबकी लगा रहे हैं और पावन नदी में फूलार्पण के साथ संगीत और मंत्रोच्चारण के साथ वहां के माहौल को प्रफुल्लित कर रहे हैं।

हालांकि अभी भी अंतरराष्ट्रीय मीडिया के रुख में दोगलापन और एक विशेष समुदाय के पक्ष में केन्द्रित दिखता है। चाहे वह वक्फ बिल का मुद्दा हो, एनआरसी, कश्मीर के आर्टिकल 370, खालिस्तान आतंक का या उत्तर प्रदेश के संभल विवाद का। हिन्दुत्व व भारत के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय मीडिया की अधिकतर खबरें पक्षपाती रहती है।

यह कहना बिलकुल गलत नहीं होगा कि विदेशी मीडिया आज भी द्वेश बस अधिप्रचार के तहत हिंदुत्व दर्शन को गलत तरीके से पेश करती है जबकि असल सच तो यह है कि हिन्दुत्व हमेशा से सर्वधर्म संम्भाव और धर्मनिरपेक्षता की वकालत करता रहा है। ■

अंतरराष्ट्रीय शब्द कोश और केरीब्राउन के अनुसार हिन्दुत्व एक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक विश्वास का समावेशी मिश्रण है । जो मानवता, धर्म, कर्म, अध्यात्म, अहिंसा, संस्कार, मोक्ष और पुनर्जन्म पर विश्वास करता है । बड़े लम्बे अरसों से विदेशी मीडिया की सोच में भारतीय दर्शन, भारत व उसके हिन्दुत्व को लेकर, उनके लेखन में अर्धसत्य व नकारात्मकता देखने को मिलती रही है। फिर चाहे वह पड़ोसी देशों के रिश्ते को लेकर हो या भारतीय मूल में रह रहे कुछ विशेष समुदायों को लेकर, हमेशा ही अंतरराष्ट्रीय मीडिया ने दोहरे चरित्र की भूमिका पेश की है।

टैरिफ युद्ध का भारतीय अर्थव्यवस्था पर नहीं होगा अधिक प्रभाव

प्रहलाद सबनानी
सेवानिवृत्त उप महाप्रबंधक,
भारतीय स्टेट बैंक

दिनांक 2 अप्रैल 2025 को अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रम्प द्वारा, विभिन्न देशों से अमेरिका में होने वाले आयातित उत्पादों पर की गई टैरिफ सम्बंधी घोषणा के साथ ही अंततः अमेरिका द्वारा पूरे विश्व में टैरिफ के माध्यम से व्यापार युद्ध छेड़ दिया गया है। अभी, अमेरिका ने विभिन्न देशों से अमेरिका में होने वाले आयात पर विभिन्न दरों पर टैरिफ लगाया है। अब इनमें से कई देश अमेरिका से आयातित वस्तुओं पर टैरिफ लगाने की घोषणा कर रहे हैं, जैसे चीन ने अमेरिका से चीन में आयात होने वाले उत्पादों पर दिनांक 10 अप्रैल 2025 से 34 प्रतिशत की दर से टैरिफ लगाने की घोषणा की है। टैरिफ के माध्यम से छेड़े गए व्यापार युद्ध का भारत पर कोई बहुत अधिक विपरीत प्रभाव पड़ने की सम्भावना कम ही है। दरअसल, अमेरिका ने विभिन्न देशों से आयातित उत्पादों पर अलग अलग दर से टैरिफ लगाने की घोषणा की है और साथ ही कुछ उत्पादों के आयात पर फिलहाल टैरिफ की नई दरें लागू नहीं की गई हैं। टैरिफ की यह दरें 9 अप्रैल 2025 से लागू होंगी।

विभिन्न देशों से अमेरिका में आयात होने वाले उत्पादों पर 10 प्रतिशत की दर से न्यूनतम टैरिफ लगाया गया है। साथ ही, कुछ अन्य देशों यथा चीन से आयातित उत्पादों पर 34 प्रतिशत टैरिफ लगाने की घोषणा अमेरिकी राष्ट्रपति ने की है। इसी प्रकार, वियतनाम से आयातित उत्पादों पर 46 प्रतिशत, ताईवान पर 32 प्रतिशत, थाईलैंड पर 36 प्रतिशत, भारत पर 26 प्रतिशत, दक्षिण कोरिया पर 25 प्रतिशत, इंडोनेशिया पर 32 प्रतिशत, स्विट्जरलैंड पर 31 प्रतिशत, मलेशिया पर 24 प्रतिशत, कम्बोडिया पर 49 प्रतिशत, दक्षिणी अफ्रीका पर 30 प्रतिशत, बांग्लादेश पर 37 प्रतिशत, पाकिस्तान पर 29 प्रतिशत, श्रीलंका पर 44 प्रतिशत और इसी प्रकार अन्य देशों से आयातित वस्तुओं पर भी अलग अलग दरों से टैरिफ लगाने की घोषणा अमेरिकी राष्ट्रपति ने की है। कुछ उत्पादों जैसे, स्टील, एल्यूमिनियम, ऑटो, ताम्बा, फार्मा उत्पाद, सेमीकंडक्टर, एनर्जी, बुलियन एवं अन्य महत्वपूर्ण मिनरल्स को अमेरिका में आयात पर टैरिफ के दायरे से बाहर रखा गया है।

अमेरिका का मानना है कि वैश्विक स्तर पर अन्य देश अमेरिका में उत्पादित वस्तुओं के आयात पर भारी मात्रा में टैरिफ लगाते हैं, जबकि अमेरिका में इन देशों से आयात किए जाने वाले उत्पादों पर अमेरिका द्वारा बहुत कम दर पर टैरिफ लगाया जाता है अथवा बिल्कुल नहीं लगाया जाता है। जिससे, अमेरिका से इन देशों को निर्यात कम हो रहे हैं एवं इन देशों से अमेरिका में आयात लगातार बढ़ते जा रहे हैं। इस प्रकार, अमेरिका का व्यापार घाटा असहनीय स्तर पर पहुंच गया है। इसके साथ साथ, अमेरिका में विनिर्माण इकाईयां बंद होकर

ISSN No. 2581-3528

अन्य देशों में स्थापित हो गई हैं और इससे अमेरिका में रोजगार के नए अवसर भी निर्मित नहीं हो पा रहे हैं। अब ट्रम्प प्रशासन ने अमेरिका को पुनः विनिर्माण इकाईयों का हब बनाने के उद्देश्य से अमेरिका को पुनः महान बनाने का आह्वान किया है और इसी संदर्भ में विभिन्न देशों से आयातित उत्पादों पर भारी मात्रा में टैरिफ लगाने का निर्णय लिया गया है ताकि अमेरिका में आयातित उत्पाद महंगे हों और अमेरिकी नागरिक अमेरिका में ही निर्मित वस्तुओं का उपयोग करने की ओर प्रेरित हों।

वर्तमान में बढ़े हुए टैरिफ का बोझ अमेरिकी नागरिकों को उठाना पड़ेगा और उन्हें अमेरिका में महंगे उत्पाद खरीदने होंगे, क्योंकि नई विनिर्माण इकाईयों की स्थापना में तो वक्त लग सकता है, विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन तुरंत तो बढ़ाया नहीं जा सकता अतः जब तक नई विनिर्माण इकाईयों की अमेरिका में स्थापना हो एवं इन विनिर्माण इकाईयों में उत्पादन शुरू हो तब तक अमेरिकी नागरिकों को महंगे उत्पाद खरीदने हेतु बाध्य होना पड़ेगा। इससे अमेरिका में एक बार पुनः मुद्रा स्फीति की समस्या उत्पन्न हो सकती है एवं ब्याज दरों के कम होने के चक्र में भी देरी होगी, बहुत सम्भव है कि मुद्रा स्फीति को कम करने की दृष्टि से एक बार पुनः कहीं ब्याज दरों के बढ़ने का चक्र प्रारम्भ न हो जाए। लम्बे समय में जब अमेरिका में विनिर्माण इकाईयों की स्थापना हो जाएगी एवं इन इकाईयों में उत्पादन प्रारम्भ हो जाएगा तब जाकर कहीं मुद्रा स्फीति पर अंकुश लगाया जा सकेगा। विभिन्न देशों से आयातित उत्पादों पर टैरिफ सम्बंधी घोषणा के साथ ही, डॉलर पर दबाव पड़ना शुरू भी हो चुका है एवं अमेरिकी डॉलर इंडेक्स घटकर 102 के स्तर पर नीचे आ गया है जो कुछ समय पूर्व तक लगभग 106 के स्तर पर आ गया था। इसी प्रकार अमेरिका में सरकारी प्रतिभूतियों की 10 वर्ष की बांड यील्ड पर भी दबाव दिखाई दे रही है और यह घटकर 4.08 के स्तर पर नीचे आ गई है, यह कुछ समय पूर्व तक 4.70 के स्तर से भी ऊपर निकल गई थी। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपए की कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में बढ़नी प्रारम्भ हो गई है एवं यह पिछले चार माह के उच्चतम स्तर, लगभग 85 रुपए प्रति अमेरिकी डॉलर, पर आ गई है।

जब पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था विपरीत रूप से प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगी तो भारत की अर्थव्यवस्था पर भी कुछ तो विपरीत असर होगा ही। इस संदर्भ में किए गए विश्लेषण से यह तथ्य उभरकर सामने आ रहा है कि बहुत सम्भव है कि ट्रम्प प्रशासन द्वारा भारत से आयातित वस्तुओं पर लगाए गए 26 प्रतिशत के टैरिफ का भारतीय अर्थव्यवस्था पर बहुत अधिक विपरीत प्रभाव नहीं हो। क्योंकि, एक तो भारत से अमेरिका को निर्यात बहुत अधिक नहीं है। यह भारतीय सकल घरेलू उत्पाद का मात्र लगभग 3-4 प्रतिशत ही है। वैसे भी भारतीय अर्थव्यवस्था निर्यात पर निर्भर नहीं है एवं यह विभिन्न उत्पादों की आंतिरक मांग पर अधिक निर्भर है। भारत से

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा शीघ्र ही मोनेटरी पॉलिसी के माध्यम से रेपो दरों में परिवर्तन की घोषणा की जाने वाली है। भारत में चूंकि मुद्रा स्फीति की दर लगातार गिरती हुई दिखाई दे रही है अतः भारत में रेपो दर में 75 से 100 आधार बिंदुओं की कमी की घोषणा की जा सकती है।

सकल घरेलू उत्पाद का केवल लगभग 16 प्रतिशत (वस्तुएं एवं सेवा क्षेत्र मिलाकर) ही निर्यात किया जाता है। दूसरे, भारत से अमेरिका को निर्यात किए जाने वाले कुछ उत्पादों को उक्त टैरिफ व्यवस्था से फिलहाल मुक्त रखा गया है, जैसे फार्मा उत्पाद, सेमीकंडक्टर, स्टील, अल्यूमिनियम, ऑटो, ताम्बा, बुलीयन, एनर्जी आदि। संभवतः इन उत्पादों के भारत से अमेरिका को होने वाले निर्यात पर कुछ भी असर नहीं होने जा रहा है। तीसरे, भारतीय कम्पनियों (26 प्रतिशत टैरिफ) को रेडीमेड गार्मेंट्स के अमेरिका को निर्यात में पड़ौसी देशों, यथा, बांग्लादेश (37 प्रतिशत टैरिफ), पाकिस्तान (29 प्रतिशत टैरिफ), श्रीलंका (44 प्रतिशत टैरिफ), वियतनाम (46 प्रतिशत टैरिफ), चीन (34 प्रतिशत टैरिफ), इंडोनेशिया (32 प्रतिशत टैरिफ), आदि के साथ अत्यधिक स्पर्धा का सामना करना पड़ता है। परन्तु, उक्त समस्त देशों से अमेरिका को होने वाले रेडीमेड गार्मेंट्स के निर्यात पर भारत की तुलना में अधिक टैरिफ लगाए जाने की घोषणा की गई है। अतः इन देशों से रेडीमेड गार्मेंट्स के अमेरिका को निर्यात भारत की तुलना में महंगे हो जाएंगे, इससे रेडीमेड गार्मेंट्स के क्षेत्र में भारत के लिए लाभ की स्थिति निर्मित होती हुई दिखाई दे रही है। इसी प्रकार, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कृषि उत्पादों के निर्यात भी भारत से अमेरिका को बढ़ सकते हैं।

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा शीघ्र ही मोनेटरी पॉलिसी के माध्यम से रेपो दरों में परिवर्तन की घोषणा की जाने वाली है। भारत में चूंकि मुद्रा स्फीति की दर लगातार गिरती हुई दिखाई दे रही है अतः भारत में रेपो दर में 75 से 100 आधार बिंदुओं की कमी की घोषणा की जा सकती है। यदि ऐसा होता है तो विभिन्न उत्पादों की उत्पादन लागत में कुछ कमी सम्भव होगी, जिसके चलते भारत में निर्मित उत्पाद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अधिक प्रतिस्पर्धी बन सकते हैं। हालांकि, केवल ब्याज दरों के कमी करके पूंजी की लागत को कम करने से काम चलने वाला नहीं है, भारत को भूमि एवं श्रम की लागतों को भी कम करने की आवश्यकता है तथा उत्पादकता में सुधार करने की भी आवश्यकता है ताकि भारत में निर्मित होने वाले उत्पादों की कुल लागत में कमी हो एवं यह उत्पाद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा में अन्य देशों के मुकाबले में टिक सकें। वैश्विक स्तर पर कूटनीतिक, सामरिक, रणनीतिक, राजनैतिक एवं भौगोलिक परिस्थितियों में आमूल चूल परिवर्तन होता हुआ दिखाई दे रहा है, परिवर्तन के इस दौर में भारतीय कम्पनियां कितना लाभ उठा सकती हैं यह भारतीय कम्पनियों के कौशल पर निर्भर करेगा। साथ ही, केंद्र सरकार द्वारा शीघ्रता से अपने आर्थिक सुधार कार्यक्रमों को गति देकर भी वैश्विक स्तर पर निर्मित हुई उक्त परिस्थितियों का लाभ उठाया जा सकता है। ■

ISSN No. 2581-3528

प्रदेश का उत्कर्ष काल

प्रदेश में है अब विकास और उत्सव का काल

मृत्युंजय दीक्षित
लेखक एवं साहित्यकार

आज प्रदेश में सर्वाधिक एयरपोर्ट हैं। 2017 से पूर्व किसी ने सपने में भी नहीं सोचा था कि अयोध्या व श्रावस्ती में भी भव्य एयरपोर्ट बन सकता है किंतु अब एयरपोर्ट कार्य कर रहे हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि अब प्रदेश बेहतर कानून व्यवस्था के बल पर सभी क्षेत्रों मे प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है। यूपी देश की बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार के 8 वर्ष का कार्यकाल पूर्ण हो चुका है। इन 8 वर्षों की सफलता और उपलब्धियों को आधार बनाकर भारतीय जनता पार्टी ने मिशन 2027 की तैयारियां भी आरम्भ कर दी हैं। प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी ने 25 से 27 मार्च 2025 तक हर जिले में तीन दिवसीय विकास उत्सव मनाया जिसमें सरकार की उपलब्धियों का विस्तृत रिपोर्ट कार्ड प्रस्तुत किया गया तथा विभिन्न लाभार्थियों से संपर्क कर धरातल को भी परखा गया। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का मानना है कि "प्रदेश वही है, तंत्र वही है बस सरकार बदलने से बदलाव हुआ है और प्रदेश बीमारू प्रदेश से देश का ग्रोथ इंजन बन रहा है, आज प्रदेश श्रम शक्ति से अर्थ शक्ति बनने की ओर अग्रसर है।

भाजपा का दावा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में, सबका साथ सबका विकास की नीति व अपराध पर जीरो टालरेंस की नीति को सफलता के साथ पूरा किया जा रहा है। अपराधियों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही करते हुए 222 दुर्दांत अपराधियों का एनकाउंटर किया गया और 930 से अधिक अपराधियों के खिलाफ एनएसए की कार्यवाही हो चुकी है। मुख्यमंत्री योगी की बुलडोजर बाबा की छवि प्रदेश की जनता को पसंद है। अब तो अन्य राज्यों में भी लोग "मुख्यमंत्री हो तो योगी जैसा" की बात करने लगे हैं। प्रदेश के अपराधियों में भय का वातावरण उत्पन्न हुआ है क्योंकि अपराधी अगर अपराध करके दूसरे राज्यों में भागकर संरक्षण प्राप्त करने का प्रयास करता है तब भी वह बच नहीं पा रहा है । बेहतर होती कानून व्यवस्था के कारण प्रदेश के हर क्षेत्र में सर्वांगीण विकास में योगदान देने के लिए राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय निवेशक आकर्षित हो रहे हैं। प्रदेश में सांप्रदायिक दंगे नहीं होते, जिससे

ISSN No. 2581-3528

हिंदू व मुसलमान दोनों ही सुरक्षित महसूस करते हैं। प्रदेश में लव जिहाद व धर्मांतरण जैसी घटनाओं को रोकने के लिए कड़े कानून बनाये गये हैं। प्रदेश में परीक्षाओं में होने वाली नकल को रोकने के लिए भी प्रभावी कानून बनाया गया है जिसका प्रभाव भी दिख रहा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश में सनातन की पुनर्प्रतिष्ठा हो रही है। अयोध्या में प्रभु राम की जन्मस्थली पर दिव्य भव्य मंदिर का उदघाटन संपन्न होने, काशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर का निर्माण होने और अब प्रयागराज में महाकुंभ –2025 के सफल आयोजन से सनातन धर्मियों के बीच प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की लोकप्रियता बढ़ी है। आस्था के केन्द्रों के विकास के कारण प्रदेश में तीर्थाटन के लिए आने वालों की संख्या में रिकार्ड वृद्धि हो रही है । अयोध्या, काशी, मथुरा सहित अन्य सभी धार्मिक स्थलों ने घरेलू पर्यटन के क्षेत्र में प्रदेश को बड़ी बढ़त दिलाई है। वर्ष 2024 में प्रदेश में 64.90 करोड़ पर्यटकों का आगमन हुआ जिसके अंतर्गत विदेशी पर्यटकों की संख्या में 6.67 लाख थी। प्रदेश में धार्मिक पर्यटन सहित पर्यटन की अन्य संभावनाओं का भी विकास किया जा रहा है।

एक जिला –एक उत्पाद योजना की ही तरह एक जिला एक पर्यटन स्थल का भी विकास किया जा रहा है। जैसे सीतापुर जिले में नैमिषारण्य, लखनऊ में चंद्रिका देवी मंदिर तथा पुराना हनुमान मंदिर, बाराबंकी में लोधेश्वर महादेव। मिर्जापुर जिले में स्थित मां विंध्यवासिनी धाम में भी कॉरिडोर का निर्माण कार्य प्रगति पर है। अयोध्या व काशी के बाद मथुरा वृंदावन के वृहद स्तर पर विकास की बात मुख्यमंत्री जी सदा करते हैं। इस कार्य को सही रूप से पूर्ण करने के लिए श्री अयोध्या जी तीर्थ विकास परिषद, श्री देवीपाटन तीर्थ विकास परिषद, उप्र ब्रज तीर्थ विकास परिषद, श्री विन्ध्य धाम तीर्थ विकास परिषद, चित्रकूट धाम तीर्थ विकास परिषद एवं नैमिषारण्य धाम तीर्थ विकास परिषद का गठन किया गया है ।

प्रदेश में एक्सप्रेस –वे बन रहे हैं और फिर उसी गति से अंतर्जनपदीय सड़कों का भी निर्माण हो रहा है। 8 वर्षों में प्रति व्यक्ति आय 46 हजार से बढ़कर 1लाख 24 हजार हो गयी है। अब प्रदेश में आयुध निर्माण भी होने लगा है। महिला, किसान, छात्र, युवा सभी वर्ग के लोग सरकारी योजनाओं से सीधे लाभान्वित हो रहे हैं। प्रदेश में 8 वर्षे में पौधरोपण अभियान भी व्यापक पैमाने पर चल रहा है जिसके अंतर्गत अब तक 204 करोड़ पौधरोपण हो चुका है जिसका असर यह हुआ है कि 2 लाख एकड़ में हरीतिमा बढ़ी। प्रदेश सरकार सामाजिक सरोकारों में अग्रणी है जिसके अंतर्गत अनाथ परिवारों की सहायता की जा रही है। प्राकृतिक आपदाओं में भी सरकार भरपूर सहायता उपलब्ध करा रही है।

प्रदेश में एक्सप्रेस -वे बन रहे हैं और फिर उसी गति से अंतर्जनपदीय सड़कों का भी निर्माण हो रहा है। 8 वर्षों में प्रति व्यक्ति आय 46 हजार से बढ़कर 1 लाख 24 हजार हो गयी है। अब प्रदेश में आयुध निर्माण भी होने लगा है। महिला, किसान, छात्र, युवा सभी वर्ग के लोग सरकारी योजनाओं से सीधे लाभान्वित हो रहे हैं।

उत्तर प्रदेश देश का पहला ऐसा राज्य बनने की ओर अग्रसर है जो जीरो पावर्टी स्टेट यानि गरीबी मुक्त प्रदेश होगा। प्रदेश में 15 करोड़ नागरिकों को निशुल्क राशन का वितरण किया जा रहा है।60 लाख माताओं को प्रधानमंत्री मातृ वंदना सहायता का लाभ मिल रहा है। 1 करोड़ परिवारों को घरौनी प्रमाणपत्र मिलने से गांवों में जमीन संपत्ति संबंधी विवादों का निपटारा हो रहा है।

युवाओं को बड़ी संख्या में रोजगार उपलब्ध होने के कारण बेरोजगारी की दर मात्र 3 प्रतिशत रह गई है। केंद्र सरकार की कई जनकल्याणकारी योजनाओं को क्रियान्वित करने में प्रदेश नंबर बन चुका है, इनमें प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत योजना में सबसे अधिक आयुष्मान कार्ड बने हैं, प्रधामनंत्री आवास योजना के सर्वाधिक लाभर्थी उत्तर प्रदेश से हैं। स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत देश में सबसे अधिक 2.75 करोड़ से अधिक शौचालय बने। कौशल विकास नीति को लागू करने वाला देश का प्रथम राज्य यूपी बना है। खाद्यान्न, दूध, आलू आंवला, आम, गन्ना, चीनी और इथेनॉल उत्पादन में प्रदेश नंबर वन बन चुका है। 400 लाख टन सब्जियों का उत्पादन कर यूपी देश में प्रथम स्थान पर है। एक जिला एक मेडिकल कॉलेज के अंतर्गत प्रदेश के सभी 80 जिलों में मेडिकल कॉलेज का संचालन किया जा रहा है।

आज प्रदेश में सर्वाधिक एयरपोर्ट हैं । 2017 से पूर्व किसी ने सपने में भी नहीं सोचा था कि अयोध्या व श्रावस्ती में भी भव्य एयरपोर्ट बन सकता है किंतु अब एयरपोर्ट कार्य कर रहे है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि अब प्रदेश बेहतर कानून व्यवस्था के बल पर सभी क्षेत्रों मे प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है। यूपी देश की बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। प्रदेश में गुलामी के प्रतीकों का महिमामंडन नहीं होता अपितु प्रदेश की योजनाओं का नामकरण महापुरुषों के नाम पर किया जा रहा है।

महाकुंभ 2025 के सफल आयोजन के बाद तो यूपी सरकार की प्रतिष्ठा पूरे विश्व में बढ़ गई है। प्रदेश में सांस्कृतिक पुनर्जागरण की गूंज सुनाई दे रही है और निस्संदेह इसमें प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। योगी जी के नेतृत्व में प्रदेश अभ्युदय काल देख रहा है। ■

ISSN No. 2581-3528

आधुनिक भारत का तीर्थ : जलियांवाला बाग

– अमित चन्ना, आयुषी, आलोक जैन 'बुढ़ार'

"भारत के असंभव पुरुष उठेंगे और अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र कराएंगे" – (जलियाँवाला बाग नरसंहार के बाद महात्मा गांधी की घोषणा)

मानवता के इतिहास की क्रूरतम घटनाओं में तत्कालीन ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन द्वारा जलियाँवाला बाग में किया गया नरसंहार भी शामिल है। ब्रिटिश सरकार का यह कृत्य भारतीय इतिहास में एक कलंकित और काले अध्याय के तौर पर दर्ज है। जालियाँवाला बाग में किया गया नरसंहार किसी तात्कालिक वजह से नहीं हुआ बल्कि इस नरसंहार को जनरल डायर ने बेहद सोच समझकर अंजाम दिया था। कई इतिहासकारों का मानना है कि जलियाँवाला बाग हत्याकांड के लिए अमृतसर में हुए हिंसक प्रदर्शन जिम्मेदार थे। अमृतसर में हुए हिंसक प्रदर्शन और आगजनी की घटना के बाद शहर को सेना के हवाले कर दिया गया था, लेकिन जलियाँवाला बाग में जो नरसंहार जरनल डायर ने किया अगर उसके पहले और बाद की घटनाओं को देखें तो स्पष्ट होता है कि अंग्रेजों ने भारतीयों को सबक सिखाने की योजना बना ली थी।

1918 में अहमदाबाद में मिलों में हड़ताल हुई और उसको व्यापक जनसमर्थन हासिल हुआ। जिसे देख कर ब्रिटिश शासन के कान खड़े हो गए थे। 1919 के आरंभ में ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार ने रालेट ऐक्ट के नाम से एक दमनकारी कानून पारित किया। इस कानून द्वारा आतंकवादी गतिविधियों को रोकने के नाम पर भारतीयों के नागरिक अधिकारों पर पाबंदी लगाई गई थी। प्रथम

अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर कार्यालय में 484 शहीदों की सूची लगी हुई है जबकि बाग में लगी पटिका पर 388 शहीदों के नाम लिखे हुए हैं। ब्रिटिश शासन के अभिलेखों के अनुसार कुल 200 लोग घायल हुए और 379 लोग शहीद हुए। इनमें 337 बालिग 41 नाबालिग और एक छह सप्ताह का बालक भी था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पं. मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता में एक जांच समिति का गठन किया।

विश्व युद्ध समाप्त हो चुका था और उसके बाद इस तरह के कानून की उम्मीद नहीं की गई थी क्योंकि भारतीय नेताओं और जनता ने खुले रूप से ब्रिटिश सरकार का साथ दिया था। ब्रिटिश सरकार ने जल्दबाजी में इस कानून को पारित करवाने की कोशिश की तो भारतीय जन मानस पर उसका उलट असर पड़ा। पूरे देश में उसके खिलाफ माहौल बनना शुरू हो गया। सत्याग्रह सभा की स्थापना के साथ ही महात्मा गांधी ने स्वाधीनता सेनानियों से गाँव–गाँव जाकर लोगों को जागरूक करने की अपील की। इस अपील का असर जमीन पर दिखने लगा था। इस कानून के विरोध में बड़ी–बड़ी सभाएं होने लगी थीं, जिनमें आम लोगों की भागीदारी भी बढ़ने लगी थी। वर्ष 1919 का मार्च और अप्रैल का महीना स्वाधीनता आंदोलन के दौर में जनता के राजनीतिक रूप से जागरूक होने और ब्रिटिश हुकूमत की परेशानी बढ़ाने वाला साबित हो रहा था। औपनिवेशिक शासन इसको दबाने की योजना बनाने लगा था।

जब रालेट ऐक्ट के विरोध में पूरे देश में हड़ताल, विरोध प्रदर्शन होने लगे। औपनिवेशिक शासन ने इसको दबाने के लिए बल का प्रयोग किया। लखनऊ, पटना, कलकता, बाम्बे, कोटा, और अहमदाबाद में इन विरोध प्रदर्शनों को दबाने के लिए तत्कालीन शासन ने निहत्थे लोगों पर जमकर लाठियाँ चलाईं। प्रदर्शनों को दबाने के लिए कहीं–कहीं गोलियों का भी प्रयोग किया गया । इन विरोध प्रदर्शनों की तीव्रता और उसमें आम नागरिकों की भागीदारी से उत्साहित होकर महात्मा गांधी नें छह अप्रैल को राष्ट्रव्यापी हड़ताल की घोषणा

ISSN No. 2581-3528

कर दी। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने इस जन आंदोलन को दबाने के लिए अपना दमनचक्र तेज कर दिया था। बिना किसी कारण के गिरफ्तारियां होने लगी थीं और लोगों को जेलों में ठूंसा जाने लगा। पूरे देश में इसकी बेहद तीव्र प्रक्रिया हुई।

अप्रैल 1919 में ब्रिटिश शासन ने सत्यपाल और सैफुद्दीन किचलू को रॉलट ऐक्ट के विरोध में भाषण देने के कारण गिरफ्तार कर लिया और पंजाब के अधिकतर भाग में मार्शल लॉ लगा दिया। उनकी गिरफ्तारी के विरोध में अमृतसर और आस पास के लोग वैसाखी के दिन 13 अप्रैल को जलियाँवाला बाग में प्रदर्शन के लिए जमा हुए। ब्रिगेडिएर जनरल डायर 90 ब्रिटिश सेनिकों को लेकर वहां पहुंचे और बाग को घेर लिया। बिना कोई चेतावनी दिए निहत्थे लोगों पर गोली चलानी शुरू कर दी। 10 मिनट में कुल 1650 राउंड गोलियां चलाई गईं। बाग में आने जाने का एक ही संकरा मार्ग था जिससे निकलना असम्भव था। बाग में एक कुआं था और लोग जान बचाने के लिए उस कुएं में कूद गए। कुछ ही देर में कुआं भी लाशों से पट गया। लगभग 120 शव तो कुएं से ही मिले। घायलों को भी इलाज न मिल पाया क्योंकि अमृतसर में कर्फ्यू लगा हुआ था।

अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर कार्यालय में 484 शहीदों की सूची लगी हुई है जबकि बाग में लगी पटिका पर 388 शहीदों के नाम लिखे हुए हैं। ब्रिटिश शासन के अभिलेखों के अनुसार कुल 200 लोग घायल हुए और 379 लोग शहीद हुए। इनमें 337 बालिग 41 नाबालिग और एक छह सप्ताह का बालक भी था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पं. मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता में एक जांच समिति का गठन किया। उन्होंने जलियाँवाला बाग नरसंहार के मृतकों की संख्या 1300 के लगभग बताई गई। स्वामी श्रद्धानंद के अनुसार मरने वालों की संख्या 1500 से अधिक थी जबकि अमृतसर के तत्कालीन सिविल सर्जन डॉक्टर स्मिथ का कहना था कि जालियाँवाला बाग में मरने वालों की संख्या 1800 से अधिक थी।

इस प्रदर्शन को दबाने के लिए जनरल डायर ने जो अपराध किया, उसने ब्रिटिश साम्राज्य को भारत पर कुछ सालों तक भारत पर शासन करने की ताकत भले ही दे दी, लेकिन भारत की जनता इस जख्म को भूल नहीं सकी। जालियाँवाला बाग नरसंहार में बहे खून ने भारत के स्वाधीनता आंदोलन को नई दिशा दे दी।

जलियाँवाला बाग नरसंहार के छह महीने बाद उसकी जांच का दिखावा भी ब्रिटिश हुकूमत ने किया। ब्रिटिश सरकार ने लार्ड विलियम हंटर की अगुवाई में एक कमेटी बनाई और उसको नरसंहार की जांच का जिम्मा सौंपा। इसको हंटर कमीशन के नाम से जाना गया। हंटर कमीशन के सामने जनरल डायर ने जो बयान दिया, उसको देख कर ये लगता है कि 1000 से अधिक निहत्थे लोगों का हत्यारा कितना बेखौफ था। जरनल डायर ने कहा कि भीड़ पर गोली चलाने की योजना बनाई गई थी ताकि भविष्य में कोई भी ब्रिटिश सरकार से विद्रोह करने की न सोचे। उसने तो यहां तक कहा था कि अगर उस समय हथियार बंद गाड़ियां होतीं तो वो लोगों को कुचलवा देता। इस बयान को अगर जनरल डायर के कृत्य को हाउस आफ लार्ड्स में मिले समर्थन से जोड़ कर देखें तो स्पष्ट है कि अंग्रेजों ने एक नरसंहार की योजना बनाई थी। यह अकारण नहीं था कि जब हाउस आफ लार्ड्स जनरल डायर के कारनामे के पक्ष में वोटिंग कर रही थी, उसी समय ब्रिटेन की जनता ने जनरल डायर के लिए उस वक्त 30000 पाउंड की भारी-भरकम राशि जुटाई थी।

जालियाँवाला बाग हत्याकांड के विरोध-स्वरूप गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी नाइटहुड लौटा दिया। ऐसा ही महात्मा गांधी ने अपना कैसर ए हिन्द का खिताब वापिस कर दिया। इस घटना के बाद पंजाब भी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में पूर्ण रूप से सम्मिलित हो गया। वर्ष 1920 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित कर बाग में स्मारक बनाने के लिए एक ट्रस्ट की स्थापना की। 1923 में ट्रस्ट ने स्मारक परियोजना के लिए भूमि खरीदी और 1961 में तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की उपस्थिति में राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद ने स्मारक का उद्घाटन किया। जिस कुएं में कूद कर अनेक लोगों ने 13 अप्रैल 1919 को अपनी जान दी वो बाग में अब संरक्षित स्मारक के रूप में है। बाग की दीवारों में लगी गोलियां भी संरक्षित की गई हैं। बाग में एक गैलरी और प्रदर्शनी स्थल भी है जहां इस स्थान के इतिहास से संबंधित सूचना पटिकाएं लगाई गई हैं। साथ ही एक अमर ज्योति है जो शहीदों की याद में चौबीसों घंटे प्रज्वलित रहती है।

6.5 एकड़ में फैला जलियाँवाला बाग अमृतसर के स्वर्ण मंदिर से 2 मिनट की दूरी पर है। ऐतिहासिकता को संरक्षित रखते हुए इसके कुछ भाग का पुनर्निर्माण किया गया है। अमृतसर आने वाले पर्यटक जलियाँवाला बाग जरूर आते हैं और स्वतंत्रता संग्राम में अपनी जान की आहुति देने वाले हजारों शहीदों को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। जलियाँवाला बाग में प्रवेश करते ही एक अनोखी और गर्व से परिपूर्ण अनुभूति का एहसास होता है और मस्तक स्वयं ही स्वतंत्रता सेनानियों की याद में झुक जाता है। सुबह 6.30 से शाम 7 बजे तक खुलने वाला ये बाग सही मायने में आधुनिक भारत का तीर्थस्थल है। ■

ISSN No. 2581-3528

संघ द्वारा पर्यावरण जागरूकता अभियान उद्देश्य, प्रभाव और चुनौतियाँ

डॉ. वेद प्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष – भूगोल
के. डी. कॉलेज सिम्भावली, जनपद हापुड़

सार (Abstract) :– वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण एक वैश्विक आवश्यकता बन गयी है। भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में सरकारी प्रयास के साथ–साथ गैर–सरकारी तत्वों की भूमिका भी बेहद महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) एक ऐसा सांस्कृतिक एवं सामाजिक संगठन है, जो विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में भी सक्रिय भूमिका निभा रहा है। यह शोध पत्र संघ द्वारा पर्यावरण जागरूकता अभियान द्वारा संचालित अभियानों, उनके प्रभावों और सामने आने वाली झलक का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

संघ द्वारा घोषणा, जल–संरक्षण, प्लास्टिक मुक्त भारत, स्वच्छता अभियान जैसे विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से पर्यावरण के प्रति जनसामान्य में अपनापन पैदा किया गया है। इन अभियानों का प्रभाव न केवल संतुलन की दिशा में देखा गया, बल्कि सांस्कृतिक, नैतिक एवं उत्तरदायित्व की भावना को भी प्रोत्साहन मिला है। हालाँकि संघ को इन अभियानों के दौरान कुछ व्यवहारिक, सामाजिक एवं राजनीतिक उपन्यासों का भी सामना करना पड़ा, फिर भी उनका प्रयास उद्योग जगत की दिशा में एक सकारात्मक परिवर्तन है।

मुख्य शब्द (Key word) :– राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस), पर्यावरण संरक्षण, जागरूकता पर्यावरण, सामाजिक संगठन, जनसहभागिता, वर्गीकरण अभियान, जल संरक्षण, देहात, विकास, अंतिम चुनौतियाँ

उद्देश्य (Objective) :–

1. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा पर्यावरण संरक्षण अभियान चलाये जा रहे अभियानों का विश्लेषण करना।

2. इन अभियानों के पीछे निहित तत्वों को स्पष्ट करना।

3. संघ द्वारा जागरूकता की प्रक्रिया और माध्यमों का अध्ययन।

4. प्रभावोत्पादक अभियान के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पारिस्थितिक प्रभाव का आकलन करना।

5. इन अभियानों के सामने आने वाली प्रमुख शख्सियतों की पहचान करना।

प्रस्तावना (Introduction) :– वर्तमान युग में पर्यावरण संरक्षण वैश्विक चिंता का विषय बन गया है। जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, जल एवं वायु प्रदूषण जैसी समस्याएँ मानवीय दृष्टिकोण को संकट में डाल रही हैं। ऐसे में केवल सरकारी प्रयास ही आत्मनिर्भर नहीं हैं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक विद्वानों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। भारत में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) एक ऐसा संगठन है, जिसने न केवल सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में काम किया है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में भी कई प्रभावशाली पहल की हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा पर्यावरण जागरूकता अभियान चलाये जाने वाले अभियानों का उद्देश्य केवल वर्गीकरण तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाते हुए जैव विविधता संरक्षण, जल–संरक्षण, प्लास्टिक समावेशन और स्वतंत्रता जैसे आयामों को भी शामिल करता है। संघ के स्वयंसेवकों द्वारा विभिन्न माध्यमों से लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने का कार्य किया जा रहा है।

इस शोध पत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख अभियानों के उद्देश्य, सामाजिक उनके एवं पर्यावरणीय प्रभाव और इन अभियानों के सारांश का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। यह अध्ययन न केवल संघ की भूमिका को इंगित करने में सहायक होगा, बल्कि भारत में जनभागीदारी के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के नए सिरे से भी पर्यटन को बढ़ावा देगा।

1. वन महोत्सव एवं वृक्षारोपण अभियान (Van Mahotsav and Tree Plantation Campaign) :– वन महोत्सव एवं वृक्षारोपण अभियान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा पर्यावरण आवश्यक वन देश शामिल। ये एकमात्र राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा पर्यावरण संरक्षण की दिशा में नामांकन को एक अत्यंत आवश्यक कार्य माना गया है। संघ के स्वयंसेवकों 'वन फेस्टिवल' के अवसर पर देश के विभिन्न हिस्सों में अलग–अलग तरह के निजीकरण

ISSN No. 2581-3528

अभियान चलाए जाते हैं। यह केवल प्रदर्शन या नाटकीय आयोजन नहीं होता, बल्कि एक सामाजिक आंदोलन के रूप में संचालित किया जाता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा 5 वर्षों

2 वर्षवार वृक्षारोपण आंकड़े (2018–2022)

क्रम संख्या	वर्ष	अनुमानित वृक्षारोपण संख्या	पमुख अभियानविशेष/ जानकारी
1	2018	10 लाख	विभिन्न पांतों में स्थानीय वृक्षारोपण कार्यक्रम
2	2019	15 लाख	जल संरक्षण के साथ वृक्षारोपण अभियान
3	2020	20 लाख	कोविड-19 महामारी के दौरान सीमित कार्यक्रम
4	2021	25 लाख	एक पेड़ राम का, एक राष्ट्र का थीम के तहत अभियान
5	2022	30 लाख	राजस्थान में 50 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य निर्धारित

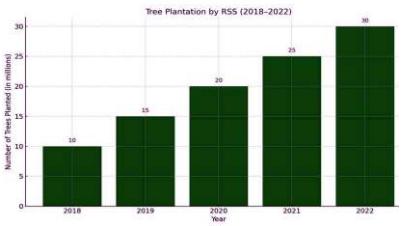

वर्ष तक आरएसएस द्वारा कराए गए वृक्षारोपण 2022 से 2018

क्षेत्रवार स्वयंसेवकों की भागीदारी

क्रम संख्या	क्षेत्र	स्वयंसेवकों की संख्या
01	पूर्वी उत्तर प्रदेश	12000
02	पश्चिमी उत्तर प्रदेश	15000
03	महाराष्ट्र	18000
04	मध्य प्रदेश	14000
05	राजस्थान	10000

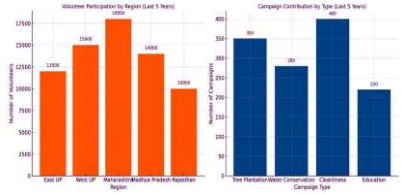

स्वयंसेवकों का अभियान प्रकार अनुसार योगदान

क्रम संख्या	अभियान प्रकार	अभियान की संख्या
01	वृक्षारोपण	350
02	जल संरक्षण	280
03	स्वच्छता	400
04	पर्यावरण शिक्षा	220

में लगाए गए वृक्ष :-

संघ का मानना है कि वृक्ष के लिए केवल पर्यावरण संतुलन की आवश्यकता नहीं है, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में उन्हें दिव्यता और पूज्यता का स्थान प्राप्त है। सनातन धर्म में वृक्षों को देवतुल्य माना गया है – पीपल, बरगद, तुलसी जैसे वृक्षों की पूजा की जाती है। इस दृष्टिकोण से स्वयंसेवकों को वृक्षों के संरक्षण, एवं नियमित देखभाल पर भी बल दिया जाता है।

इस अभियान का उद्देश्य केवल अधिकाधिक उपचारों को ले जाना नहीं है, बल्कि उन्हें वहीं स्थान पर ले जाना है जहां उनकी वृद्धि सुनिश्चित हो सके। संघ द्वारा यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि प्रत्येक लगाए गए संयंत्रों की नियमित निगरानी हो, उसे जल, खाद एवं देखभाल सेवाएं मिल रही हों, ताकि वह एक दिन बड़ा वृक्ष वृक्ष संतुलन संतुलन में योगदान दे सके।

2. **जल संरक्षण** (Water conservation) :– जल संरक्षण जनआंदोलन का रूप उद्देश्य कई प्रभावशाली राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) द्वारा जल संरक्षण को एक जनआंदोलन के रूप में देने के उद्देश्य से कई प्रभावशाली अभियानों की शुरुआत की गई है। इन 'जलग्रहण क्षेत्र विकास' (वाटरशेड विकास) (वाटरशेड डेवलपमेंट) और 'अब पुनर्जीवन' जैसे अभियान प्रमुख हैं।

'जलघर क्षेत्र विकास' अभियान के देश में काम किया प्राकृतिक जल स्रोत के अभियान के तहत संघ के स्वयंसेवकों ने देश के विभिन्न आदर्शों में प्राकृतिक जल संरक्षण का संरक्षण, नदियों और झीलों की सफाई, तालाबों का पुनरुद्धार और वर्षा जल संरक्षण के संवर्धन को बढ़ावा दिया है। इस कार्य में 'स्वदेशी विज्ञान' का सहारा लिया जाता है, जिसका उद्देश्य पारंपरिक भारतीय तकनीकों और ज्ञान तकनीकों से है।

इसके अतिरिक्त, संघ द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के अवशेषों और समूहों को प्रशिक्षण देकर स्थानीय उपयोगिता से जल संरक्षण कार्य को आत्मनिर्भर और टिकाऊ बनाने का प्रयास किया गया है। इसके ग्रामीण स्तर पर केवल जल संरक्षण के प्रति जागरूकता नहीं है, बल्कि जल के दृश्य भी बेहतर हुए हैं, जिससे खेती और कॉम्बिनेशन जैसे ग्रामीण कृषकों के प्रशिक्षण में स्थिरता आई है।

3. **प्लास्टिक मुक्त भारत** (Plastic free india) :– प्लास्टिक प्रदूषण वर्तमान समय की एक गंभीर समस्या है, जिसे दूर करने वाले तकनीशियन आरएसएस और उनके सहयोगियों ने 'प्लास्टिक मुक्त भारत' की स्थापना की है। इस दिशा में सेवा भारती और बंग और बांग्लादेश केंद्र जैसे सहयोगी संघ जैसे सहयोगी सहयोगियों ने 'राष्ट्रवादी मुक्ति अभियान' चलाया है ।

इन हो रहे अभियान के अंतर्गत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में प्लास्टिक के उपयोग से होने वाले नुकसान के प्रति जनजागरण किया गया। स्वयंसेवकों ने प्लास्टिक के स्थान पर कपड़े या जूट के थैलों के बारे में सोचने के लिए लोगों को प्रेरित किया। प्लास्टिक के लिए कई प्लास्टिसिन के लिए विशेष शिविर लगाए गए और स्केल, प्लास्टर और प्लास्टिक के छात्रावासों का आयोजन किया गया।

इन अभियानों का एक उद्देश्य यह रहा कि केवल एकल अन्वेषण तक सीमित और सामाजिक व्यवहार में बदलाव की दिशा लाने का प्रयास किया गया। इस प्रकार संघ ने एक संघ, संघ और सक्रिय समाज के निर्माण में योगदान दिया है, जो पर्यावरण संरक्षण के लिए है।

4. **पर्यावरण शिक्षा अनेक बौद्ध धर्म बौद्ध मठ** (Environmental educationMany Buddhism Buddhist monasteries) :– राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा पर्यावरण शिक्षा को जन–जागरण के माध्यम से मनाने के अनेक घटक प्रयास कर रहे हैं। संघ के पर्यावरण स्वयंसेवक आश्रमों, ग्राम सभाओं एवं नगरों में संरक्षण से संबंधित गोष्ठियाँ, संवाद एवं शिविरों का आयोजन करते हैं। इन कार्यक्रमों में

ISSN No. 2581-3528

स्थानीय समुदाय को विशिष्टता, जल संरक्षण, जैविक खेती और स्मारक से जुड़े दस्तावेज़ शामिल हैं।

' एक शाखा – एक पेड़ सुरक्षित ' जैसी योजना इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विशेष रूप से क्रियान्वित की जाती है, जहां प्रत्येक शाखा (स्थानीय वैज्ञानिक इकाई) कम–से–कम एक पौधा लगाती है और अपने शिक्षण की जिम्मेदारी स्वयंसेवकों द्वारा ली जाती है। यह योजना केवल नक्षत्ररोपण तक सीमित नहीं है, बल्कि वह अभ्यास सुरक्षित, सिद्ध और बड़ी करने की दीर्घकालीन सोच पर आधारित है।

इसके अतिरिक्त, संघ द्वारा बच्चों और किशोरों के लिए विशेष पर्यावरण शिक्षा शिविरों का आयोजन भी किया जाता है, जिसमें उन्हें प्रकृति के साथ पर्यावरण जीवन जीने के संस्कार भी शामिल हैं। ये धार्मिक स्थलीय संस्कृति, परंपरा और रिवाजों को मान्यता देते हैं।

5. प्रभाव (Effect):– राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) द्वारा संचालित पर्यावरण जागरूकता अभियानों का भारतीय समाज पर विभिन्न प्रकार से गहरा प्रभाव पड़ा है। इन अभियानों में न केवल पर्यावरण संरक्षण को एक सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में प्रस्तुत किया गया है, बल्कि जनमानस में प्रकृति की प्रतिकृति भी उत्पन्न की गई है। इसके कुछ प्रमुख प्रभाव निम्नलिखित हैं–

(i) नस्लीय नस्ल में वृद्धि (Increase in racial segregation)– आरएसएस द्वारा ग्राम स्तर पर वृक्षारोपण, स्वच्छता एवं जल संरक्षण अभियानों द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण की प्रति स्वतंत्र रूप से विकसित की जाती है। स्वयंसेवकों द्वारा चलाए गए प्रयास ने स्थानीय लोगों को एकजुट किया और उन्हें अपने पर्यावरण की रक्षा के लिए प्रेरित किया। ग्राम सभाओं, नृत्य प्रदर्शनों और धार्मिक आयोजनों के माध्यम से कलाकारों पर चर्चा कर साझेदारी को मंजूरी दी गई। इस समूह का निजी विकास हुआ और ग्रामीण समाज ने अपने प्राकृतिक संरक्षण के लिए ठोस कदम उठाए।

(ii) अल्पसंख्यकों का विकास (Development of minorities) :– आरएसएस के पर्यावरण सांस्कृतिक पहलों में सभी पुरातात्विक स्मारकों का महत्व दिया गया है। विशेष रूप से युवाओं और विद्यार्थियों को अभियानों में सक्रिय रूप से जोड़ा गया, जिससे उनमें जिम्मेदारी और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना विकसित हुई। इससे अल्पसंख्यक वर्ग के युवाओं में नेतृत्व क्षमता, सामाजिक संवाद और सामूहिक सहयोग की भावना का संचार हुआ। विभिन्न धार्मिक और सामाजिक पृष्ठभूमियों से जुड़े लोगों ने एक मंच पर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में काम किया, जिससे सामाजिक समरसता भी बनी।

(iii) स्थानीय आदिवासी संरक्षण (Local tribal protection) : आरएसएस के पर्यावरण अभियानों ने उन इलाकों में विशेष प्रभाव डाला है जहां जनाब समुदाय के लोग रहते हैं। संगठन द्वारा स्थानीय संस्कृति और वनस्पतियों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई, जिसमें वन, वन और जैव विविधता की रक्षा में भूमिका निभाई गई। आदिवासियों के साथ मिलकर पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करना, औषधीय औषधियों की पहचान और संरक्षण करना, और वन आधारित वन्यजीवों के सतत उपयोग को बढ़ावा दिया गया है। इससे न केवल शेष संतुलन को बल मिला, बल्कि जनजातीय समाज की आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक अस्मिता भी धूमिल हो गई।

6. चुनौतियाँ (Challenges) :

1. राजनीतिक–प्रत्यारोप और वादी विरोध (Political allegations and plaintiff's opposition)– राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के अनुयायियों के बीच कई देशों में कई विचारधाराएं और वामपंथी विचारधाराएं हैं। पर्यावरण जैसे तटस्थ विषय पर भी संघ के प्रयास को राजनीतिक रूप से देखा जाता है। इस कारण संघ के अनेक कार्यक्रमों को स्वावलंबन और समर्थन नहीं मिल पाता। आरोप–प्रत्यारोप की राजनीति के चलते कई बार संघ के सिद्धांतों पर भी संदेह जताया जाता है।

2. प्रशिक्षण के निर्देश और प्रभाव का अर्थ (The meaning of the directions and effects of training) – संघ के स्वयंसेवकों की संख्या भले ही लाखों में हो, लेकिन पर्यावरण संरक्षण जैसे तकनीकी और वैज्ञानिक विषयों में विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता है। सीमित और समय के कारण सभी स्वयंसेवकों को उपयुक्त प्रशिक्षण नहीं मिल पाता, जिससे अभियान की गुणवत्ता और प्रभाव सीमित रह जाता है। प्रशिक्षण का अभाव दीर्घकालीन परिभाषा का प्रभाव भी कम कर देता है।

3. दृष्टिकोण की निगरानी और संरक्षण (Monitoring and protecting the approach) – उपकरण, जैसे कि जल–संरक्षण संरचनाओं की स्थापना से अधिक महत्वपूर्ण उनका सुरक्षात्मक संरक्षण और पर्यवेक्षण है। यह कार्य केवल उपकरण से नहीं, बल्कि दृश्य और दृश्य से संभव है। संघ के कार्यक्रम में कई बार आरंभिक उत्साह देखने को मिलता है, लेकिन लंबे समय तक संरक्षण की दिशा में अस्थिरता की चुनौती बनी रहती है।

4. शहरी क्षेत्र में प्रभाव की कमी (Lack of impact in urban areas) – आरएसएस का प्रभाव और संरचनात्मक संरचना ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक मजबूत है, जहां वृक्षारोपण आधारभूत सरलता से आयोजित किया जाता है। इसके

ISSN No. 2581-3528

विपरीत, शहरी क्षेत्र में संघ की पकड़ आंशिक रूप से बनी हुई है और वहां जागरूकता अभियान चलाना अधिक कठिन है। शहरी जीवमंडल, समय की कमी और भौगोलिक क्षेत्र भी एक बड़ी बाधा हैं।

7. सुझाव (Suggestion)– सुझाव (सुझाव) संघ के अभियानों को राष्ट्रमंडल के आश्रमों में बढ़ावा देना चाहिए। स्थानीय पर्यटन के सहयोग से वृक्षों की निगरानी प्रणाली विकसित की जाये। प्रचार–प्रसार के लिए सोशल मीडिया का उपयोग शुरू हो जाए।

1. वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहन (promotion of scientific approach) – आक्षेप अभियानों में केवल वैज्ञानिक या सांस्कृतिक दृष्टिकोण तक सीमित नहीं रहे, उनमें वैज्ञानिक अनुसंधान एवं नवाचार को भी शामिल करना आवश्यक है। संघ को चाहिए कि वह ऐसे 'वैज्ञानिक आश्रमों' की स्थापना को बढ़ावा दे जहां पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का समन्वय हो। यहां पर्यावरण, पर्यावरण और स्वयंसेवकों के साथ मिलकर कार्य करने का अवसर मिल सकता है। इसका प्रभाव सुरक्षा होगा और ज्वालामुखी की परतें भी बनी रहेंगी।

2. स्थानीय पर्यटन से वृक्षावली पर्यवेक्षण प्रणाली का विकास (Development of tree plantation monitoring system through local tourism) – संघ के स्मारक कार्यक्रमों में स्थानीय पर्यटन को शामिल करने के लिए सबसे पहले एक नवीनता हो सकती है। इसके अंतर्गत अंतर्निहित स्मारक, स्मारक रेखा या जल संसाधनों को 'पर्यटन स्थल' के रूप में प्रचारित किया गया, जिससे वहां की निगरानी और संरक्षण नियमित रूप से हो सके। स्थानीय लोगों के साथ–साथ वैश्विक संरक्षण कार्य में सहभागी वृक्षों की स्थिति, वृद्धि और अवलोकन की निगरानी की जा सकती है। इससे स्थानीय उद्योग को भी बल मिलेगा।

3. प्रचार–प्रसार के लिए डिजिटल मीडिया का उपयोग (Use of digital media for promotion) – आज के युग में सोशल मीडिया एक प्रभावशाली माध्यम बन गया है। संघ को अपने प्रचार–प्रसार की जानकारी, अवेयरनेस प्लाजा, प्लाजा और अभियानों का प्रचार–प्रसार फेसबुक, विज्ञापन, यूट्यूब आदि मंचों पर करना चाहिए। इससे युवाओं में जागरूकता प्रतिरोध और अधिक लोग अभियान से जुड़ें। साथ ही एट्रिब्यूट भी सुनिश्चित होगी, जिससे संघ के एसेट की नौकरियों को व्यापक स्तर पर निर्धारित किया जा सके।

4. शोध कार्य में संघ की भूमिका भागीदारी (Role of association in research work) – पर्यावरण क्षेत्र में विभिन्न सुपरमार्केट, अनुसंधान अभिलेखागार और फोटोग्राफरों से आरएसएस को प्रभावी रूप से जोड़ना एक सकारात्मक कदम हो सकता है। इससे संघ के कार्यकलापों का दस्तावेजीकरण और वैज्ञानिक आकलन भी संभव हो सकेगा। हालाँकि, यह प्रक्रियात्मक तटस्थता और विचारधारा के साथ की जानी चाहिए ताकि किसी भी प्रकार के राजनीतिक या वैचारिक विवाद से बचा जा सके। इससे न केवल मौलिक शोध को बल मिलेगा, बल्कि संघ के प्रयास से भी अधिक सुरक्षा और प्रमाणिक लाभ मिलेगा।

निष्कर्ष (Conclusion) – राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) द्वारा संचालित पर्यावरण जागरूकता अभियान भारतीय समाज में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल हो रही है। इन अभियानों के माध्यम से संगठन ने समाज के विभिन्न लक्षणों को दर्शाया, जल संरक्षण, प्लास्टिक संयोजन और स्वतंत्रता जैसे संगठनों को एकजुट किया है। इन प्रयासों का प्रभाव न केवल मूल सुधार में दिखता है, बल्कि जनमानस में प्रकृति के प्रति आकर्षण संवर्धन में भी सहायक सिद्ध हुआ है।

हालाँकि, इन अभियानों के कुछ दृश्यों का भी सामना करना पड़ रहा है जैसे कि सीमित स्रोत, जनभागीदारी की निरंतरता बनाए रखना, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समावेश। इन अभियानों की सफलता में इस बात पर जोर दिया जाता है कि कैसे ये भविष्य के संगठन स्थानीय समुदाय, अनुयायी और प्रशासन– प्रशासन के साथ मिलकर स्थापित करें।

इस शोध पत्र से यह स्पष्ट होता है कि आरएसएस जैसे सामाजिक संगठन पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

संदर्भ सूची -

1. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघः (2022)। पर्यावरण संरक्षण – एक परिचय। नागपुर– आरएसएस प्रकाशन।

2. सिंह, रमेश. (2020)। भारतीय आन्दोलनकारी प्रकाशन भवन।. नई–दिल्ली प्रकाशन भवन।

3. वन और वन्य मंत्रालयपर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय। (2021)। पर्यावरण गतिविधियों पर वार्षिक रिपोर्ट । भारत सरकार।

4. मिश्रा, ए. (2019). 'पर्यावरण जागरूकता में नागरिक समाज की भूमिका।' जर्नल ऑफ सोशल रिसर्च, 15(2), 112–126.

5. जोशी, के. (2021)। संघ और पर्यावरणः एक समीक्षा। भोपाल–राष्ट्रवाणी प्रकाशन।

6. आरएसएस पहल : एक महत्वपूर्ण अध्ययन । 'भारतीय पर्यावरण अध्ययन जर्नल, शर्मा (2023). आरएसएस द्वारा पर्यावरण पहलः एक महत्वपूर्ण अध्ययन।' इंडियन जर्नल ऑफ एनवायर्नमेंटल स्टडीज, 22(1), 45–59।

वक्फ बाबा की जादुई झोली

प्रोफेसर (डॉ.) सुनील दत्त त्यागी
कृषि वनस्पति विज्ञानी

साल 1947 हमारा भारत आज़ाद हुआ, लेकिन साथ ही दो हिस्सों में बँट भी गया। एक तरफ बना पाकिस्तान, और दूसरी तरफ रह गया भारत। इस बँटवारे में लाखों लोग अपने घर–बार छोड़कर एक से दूसरी तरफ चले गए। कुछ मुसलमान पाकिस्तान चले गए, और बहु सारे हिंदू भारत आ गए। अब ज़रा सोचिए, जो लोग देश बदल कर आए, उन्होंने क्या खोया होगा? उनके खेत, मकान, दुकानें सब पीछे रह गईं। भारत आने वाले हिंदुओं की संपत्तियां पाकिस्तान में रह गईं और पाकिस्तान चले गए मुसलमानों की ज़मीनें भारत में यहां एक बड़ा अजीब फैसला लिया गया भारत सरकार ने उन मुसलमानों की संपत्तियाँ वक्फ़ बोर्ड को सौंप दीं, एक ऐसा संगठन जो मुसलमानों की धार्मिक और चौरिटी से जुड़ी ज़मीनों को देखता है। यहीं से शुरू होती है वक्फ

“यह कानून एक ऐतिहासिक कदम है। हम वक्फ संपत्तियों को आधुनिक और पारदर्शी तरीके से संचालित करेंगे, ताकि इन संपत्तियों का इस्तेमाल वास्तव में समाज के भले के लिए हो सके। अब हर संपत्ति को रजिस्टर किया जाएगा, और किसी भी विवाद में सरकार को फैसला करने का अधिकार मिलेगा।”
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

बाबा की कहानी एक ऐसी झोली के साथ जो दिन–ब–दिन बड़ी होती जा रही है। सबसे पहले साल 1954 में वक्फ़ एक्ट बनाया गया। इसका मतलब था जो जमीनें मुसलमान धर्म के नाम पर थीं, उन पर वक्फ़ बोर्ड की देखरेख रहेगी। शुरुआत में ये ठीक लगा, लेकिन फिर साल 1995 में कानून में बड़े बदलाव किए गए। वक्फ बोर्ड को इतनी ताकत दे दी गई कि अब वो किसी भी ज़मीन पर सिर्फ सोचकर दावा कर सकता था। बाद में 2013 में इस एक्ट में और बदलाव किए गए। अब वक्फ बाबा को मिला एक ऐसा अधिकार ष्अगर वक्फ़ बोर्ड मान ले कि कोई ज़मीन उसकी है, तो वही सच है ! और ये भी अगर आपको विरोध करना है, तो आप सीधा कोर्ट नहीं जा सकते। आपको वक्फ बोर्ड के ट्राइब्यूनल में जाना होगा, और वहाँ से जो फैसला आएगा, वो अंतिम होगा। यहां तक कि सुप्रीम कोर्ट भी उसमें दखल नहीं दे सकता। अब जरा सोचिए, ऐसा कानून किसी धर्म के लिए हो, और बाकी धर्मों के लोग कुछ ना कर पाएं क्या ये एक धर्मनिरपेक्ष देश में सही है? वक्फ़ बोर्ड की झोली धीरे–धीरे

ISSN No. 2581-3528

बढ़ती गई। 2009 में इनके पास 4 लाख एकड़ जमीन थी, लेकिन 2024 तक ये 8 लाख एकड़ से ज़्यादा हो चुकी है! आज वक्फ बोर्ड के पास करीब 8,54,000 प्रॉपर्टियाँ हैं। और आपको जानकर हैरानी होगी सेना और रेलवे के बाद सबसे ज्यादा जमीन वक्फ बोर्ड के पास है।

अब सवाल है ये जमीनें बढ़ कैसे रही हैं? कब्रिस्तान के पास दीवार खड़ी कर दो, और कह दो ये हमारी जमीन है। किसी छोटी सी मजार या मीनार को मस्जिद बता दो, और फिर कहो "ये भी वक्फ की जमीन है। गाँव के किसी कोने में मस्जिद की दीवार बनाओ और आस–पास की जमीन को अपना बता दो। तमिलनाडु का हाल ही में बड़ा मामला सामने आया 6 गाँवों को वक्फ़ की संपत्ति घोषित कर दिया गया, जिसमें एक 1500 साल पुराना हिंदू मंदिर भी शामिल है!

दिल्ली में भी 2014 में, सरकार ने 123 कीमती प्रॉपर्टियाँ वक्फ़ बोर्ड को सौंप दीं। यह सब एक ही कानून के दम पर हो रहा है वक्फ़ एक्ट।

अब जरा सोचिए

–क्या कोई हिंदू बोर्ड किसी मस्जिद या मुस्लिम घर पर दावा कर सकता है?

–क्या सिख गुरुद्वारा कमेटी किसी गाँव को अपनी संपत्ति बता सकती है?

–क्या कोई ईसाई मिशनरी ट्राइब्यूनल बना कर जमीन ले सकता है?

नहीं! कोई नहीं कर सकता ।

तो फिर सिर्फ एक धर्म के लिए ऐसा कानून क्यों ?

और मजे की बात – मुस्लिम देशों में भी ऐसा वक्फ कानून नहीं है। ना तुर्की में, ना मिस्र, ना इराक, ना सूडान, ना सीरिया में। लेकिन भारत में है वो भी एक धर्मनिरपेक्ष देश में!

अब वक्फ एक्ट को लेकर देशभर में सवाल उठ रहे हैं। लोग पूछ रहे हैं –

क्या ये कानून संविधान के खिलाफ नहीं है?

ष्क्या ये कानून समाज में भेदभाव नहीं करता? क्या ये ज़रूरी नहीं कि इस कानून की समीक्षा हो और इसे रद्द किया जाए?

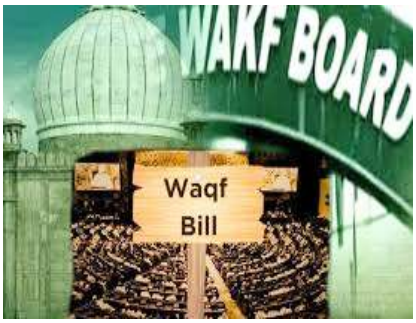

वक्फ बोर्ड की झोली धीरे-धीरे बढ़ती गई। 2009 में इनके पास 4 लाख एकड़ ज़मीन थी, लेकिन 2024 तक ये 8 लाख एकड़ से ज्यादा हो चुकी है! आज वक्फ़ बोर्ड के पास करीब 8,54,000 प्रॉपर्टियाँ हैं। और आपको जानकर हैरानी होगी सेना और रेलवे के बाद सबसे ज़्यादा ज़मीन वक्फ़ बोर्ड के पास है

वक्फ एक्ट अब एक साधारण कानून नहीं रहा, यह अब एक जादुई झोली बन चुका है जो किसी की भी ज़मीन को निगल सकता है। देशवासियों को जागरूक होना होगा। यह कहानी अब हर गली–मोहल्ले, हर गाँव, हर शहर में सुनाई जानी चाहिए ताकि किसी की मेहनत की ज़मीन किसी झोली में ना समा जाए ।

फिर आया सरकार का नया कदम।

साल 2024 में भारत सरकार ने वक्फ (संशोधन) विधेयक पेश किया, जिसका उद्देश्य था, वक्फ संपत्तियों की बेहतर देखरेख और प्रशासन की पारदर्शिता सुनिश्चित करना । सरकार ने इसे एक बड़े सुधार के रूप में प्रस्तुत किया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा–

"यह कानून एक ऐतिहासिक कदम है। हम वक्फ संपत्तियों को आधुनिक और पारदर्शी तरीके से संचालित करेंगे, ताकि इन संपत्तियों का इस्तेमाल वास्तव में समाज के भले के लिए हो सके। अब हर संपत्ति को रजिस्टर किया जाएगा, और किसी भी विवाद में सरकार को फैसला करने का अधिकार मिलेगा। "

साथ ही, सरकार ने यह भी प्रस्तावित किया कि वक्फ बोर्ड में अब गैर–मुस्लिमों को भी शामिल किया जा सकता है। हमारे देश में कई धर्म और संस्कृति एक साथ रहते हैं। यह बहुत अच्छा है कि सरकार इस कानून के जरिए वक्फ संपत्तियों की निगरानी करने की कोशिश कर रही है। इससे सिर्फ पारदर्शिता बढ़ेगी, बल्कि गलत इस्तेमाल को भी रोका जा सकेगा। अगर यह वक्फ संपत्तियाँ समाज के भले के लिए हैं, तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि उनका सही उपयोग हो ।

हमारे देश में हर किसी को अपनी धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार है। लेकिन साथ ही, यह भी जरूरी है कि कोई भी संपत्ति, चाहे वह वक्फ हो या कोई अन्य, सही तरीके से संचालित हो। अगर यह कानून मुस्लिम समाज की भलाई के लिए है, तो मुझे लगता है कि हमें इसे समझने की जरूरत है। ■

ध्येय कहां निष्फल होगा

– अथर्व दयाल शर्मा

हां चल, निकल
अश्वमेघ ने मार्ग दिखाया है ।
कंटक आयेंगे, क्रंदन आयेगा
सामर्थ्य की परीक्षा आई है ।।

दावानल की गूंज उठी,
सिंह ने सभा बुलाई है ।
अवसर है युग परिवर्तन का,
संवत्सर का, शिव शंकर का ।।

है रक्तबीज का कोलाहल
इंद्र का आसन डोल उठा ।
त्रिलोक में हा –हा कार मचा
मत्स्यन्याय सा अत्याचार रचा।।

ऋषि, मुनि, नृप, संन्यासी बने सभी अब याचक हैं
हे नाथ! सबका उद्धार करो।
उठाकर सुदर्शन और दिव्यास्त्र
त्रिलोकी तुम अब वार करो।।

चर, अचर, जर, धर, विपदा आई
संकट के मेघ चहुंओर संग लाई।
नहीं रहा सामर्थ्य मनुज में
विश्वास ने मात खाई है,
करो प्रभु उद्धार सकल अब
प्रलय की स्थिति आई है।

सतोगुण के योगी सारे वैकुंठ धाम पधारे हैं ।
मृत्युलोक के स्वामी सारे अहम् का दामन छोड़ चले
खुले द्वार निज धाम प्रभु के
जय जय कार सब बोल उठे।

दृष्टि सबकी चमक उठी,
भूले कष्ट और व्यथा सारी।
एकाएक उद्घोष हुआ
जय वंशीधर हरे मुरारी।।

बोले अनंत विक्रांत ईश्
बोले सर्वज्ञ प्रशांत ईश्
धृति, क्षमा ,संयम ,अस्तेय ,शौचम् ,
इंद्रिय निग्रह, धी, विद्या, सत्यम्, अक्रोध
दश लक्षण जप करो तुम बोध।।

हे ईश्वर की संतान समझ।
जीवन का मायाजाल समझ।
वृह्नि का पावन ताप समझ ।
वृष्टि का तू आधार समझ।
क्षर अक्षर में भेद कहां?
ऋत अतिरिक्त कोई वेद कहां?

समय ,काल ,परिस्थिति,
मन का भ्रम और कुछ नहीं।
गति तुम्हारी न्यारी है तो विपदा कैसे भारी है।।

धर्म ध्वजा संग हाथ लिए,
बढ़ो अरि का वध करो, संग तुम्हारे रामप्रिय।
तुम ही शिव, तुम ही ब्रह्मा और तुम ही हो मुरलीधारी।
किस बात का है भय तुम्हें पिता तुम्हारे त्रिपुरारी।

धर्म सर्वोपरि कह चले,
हर कर्म तुम्हारा अविचल होगा,
जीवंत करो हर क्षण को अपने
ध्येय कहां निष्फल होगा ।।

मन ने तुम्हें हराया है,
मन हि तुम्हें जिताएगा।
साहस का सेतु बांध चलो,
मेधा शक्ति को साध चलो।
जीवन्त कर हर क्षण को अपने
ध्येय कहां निष्फल होगा।।

जन्मदिवस विशेष

संविधान के निर्माता डा. आम्बेडकर

भारतीय संविधान के निर्माता डा. भीमराव आम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 को महू, मध्य प्रदेश में हुआ था। उनके पिता श्री रामजी सकपाल तथा माता भीमाबाई धर्मप्रेमी दम्पति थे। उनका जन्म महार जाति में हुआ था, जो उस समय अस्पृश्य मानी जाती थी। इस कारण भीमराव को कदम-कदम पर असमानता और अपमान सहना पड़ा। इससे उनके मन का संकल्प क्रमशः दृढ़ होता गया कि उन्हें इस बीमारी को भारत से दूर करना है।

विद्यालय में उन्हें सबसे अलग बैठना पड़ता था। प्यास लगने पर अलग रखे घड़े से पानी पीना पड़ता था। एक बार वे बैलगाड़ी में बैठ गये, तो उन्हें धक्का देकर उतार दिया गया। वह संस्कृत पढ़ना चाहते थे, पर कोई पढ़ाने को तैयार नहीं हुआ। एक बार वर्षा में वह एक घर की दीवार से लगकर बौछार से स्वयं को बचाने लगे, तो मकान मालकिन ने उन्हें कीचड़ में धकेल दिया। इतने भेदभाव सहकर भी भीमराव ने उच्च शिक्षा प्राप्त की। गरीबी के कारण उनकी अधिकांश पढ़ाई मिट्टी के तेल की ढिबरी के प्रकाश में हुई। यद्यपि सतारा के उनके अध्यापक श्री अम्बा वाडेकर, श्री पेंडसे तथा मुम्बई के कृष्णाजी केलुस्कर ने उन्हें भरपूर सहयोग भी दिया। जब वे महाराजा बड़ोदरा के सैनिक सचिव के नाते काम करते थे, तो चपरासी उन्हें फाइलें फेंक कर देता था। यह देखकर उन्होंने नौकरी छोड़ दी तथा मुम्बई में प्राध्यापक हो गये। 1923 में वे लन्दन से बैरिस्टर की उपाधि लेकर भारत वापस आये और वकालत करने लगे। इसी साल वे मुम्बई विधानसभा के लिए भी निर्वाचित हुए; पर छुआछूत की बीमारी ने यहां भी उनका पीछा नहीं छोड़ा।

1924 में भीमराव ने निर्धन और निर्बलों के उत्थान हेतु 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' बनायी और संघर्ष का रास्ता अपनाया। 1926 में महाड़ के चावदार तालाब से यह संघर्ष प्रारम्भ हुआ। जिस तालाब से पशु भी पानी पी सकते थे, उससे पानी लेने की अछूत वर्गों को मनाही थी। डा. आम्बेडकर ने इसके लिए संघर्ष किया और उन्हें सफलता मिली। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखीं तथा 'मूकनायक' नामक पाक्षिक पत्र भी निकाला। इसी प्रकार 1930 में नासिक के कालाराम मन्दिर में प्रवेश को लेकर उन्होंने सत्याग्रह एवं संघर्ष किया। उन्होंने पूछा कि यदि भगवान सबके हैं, तो उनके मन्दिर में कुछ लोगों को प्रवेश क्यों नहीं दिया जाता? अछूत वर्गों के अधिकारों के लिए उन्होंने कई बार कांग्रेस तथा ब्रिटिश शासन से संघर्ष किया। भारत के स्वतन्त्र होने पर उन्हें केन्द्रीय मन्त्रिमंडल में विधि-मन्त्री की जिम्मेदारी दी गयी। भारत का नया संविधान बनाने के लिए गठित समिति के वे अध्यक्ष थे। इस नाते उन्हें आधुनिक मनु कहना उचित ही है।

संविधान में छुआछूत को दंडनीय अपराध बनाने के बाद भी वह समाज में बहुत गहराई से जमी थी। इससे वे बहुत दुखी रहते थे। अन्ततः उन्होंने हिन्दू धर्म छोड़ने का निश्चय किया। यह जानकारी होते ही ईसाई और मुसलमान नेता उनके पास तरह-तरह के प्रलोभन लेकर पहुँच गये; पर डा. आम्बेडकर ने इनमें जाना उचित नहीं समझा। विजयादशमी (14 अक्तूबर, 1956) को नागपुर में अपनी पत्नी तथा हजारों अनुयायियों के साथ उन्होंने भारत में जन्मे बौद्ध मत को अंगीकार किया। यह भारत तथा हिन्दू समाज पर उनका बहुत बड़ा उपकार है। छह दिसम्बर, 1956 को इस महान देशभक्त का देहान्त हुआ।

प्रेरणा विमर्श 2020 के अवसर पर केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक सिने विमर्श और भारतीय विरासत का विमोचन करते
लोक सभा अध्यक्ष श्री ओम बिडला जी, गोवा की पूर्व राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा जी,
उत्तर प्रदेश के जल शक्ति मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह जी व अन्य अतिथिगण

केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक अन्त्योदय की ओर का विमोचन करते सह सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबले जी,
उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी, वरिष्ठ लेखिका अद्वैता काला जी व अन्य अतिथिगण

केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक पत्रकारिता के अग्रदूत का विमोचन करते उत्तर प्रदेश के मा.राज्यपाल श्री राम नाईक जी,
पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र संघचालक श्री सूर्यप्रकाश टोंक जी, माखनलाल चतुर्वेदी विवि. के पूर्व कुलपति
श्री जगदीश उपासने जी व अन्य अतिथिगण